पाबाँसर

लक्ष्मणदान कविया
अेम अे

सवाळख-प्रकासण
खेंण

प्रकासक
सवाळख-प्रकासण
खेंण

पोथी मिलण री ठावी ठौड
राजस्थानी ग्रन्थागार
सोजती गेट जोधपुर

चंपालाल रांका एण्ड कम्पनी
धामाणी मार्केट
चौडा रास्ता
जयपुर

पोथी री मोल—पचास रिपिया

पैलडी छपाई – आखातीज समत २०४६

छापणिया
प्रिंटिंग हाउस
जालोरी गेट के अन्दर
जोधपुर

जिणरो दूध म्हारै रग रग मे रगत बणन
रम रैयो है विण नारी धरम अर
मरजाद री धणियाणी
स्व दरियाव कवर
नै सादर समरपित

साख रा आखर

हालामण जेठवै री विरहण वदे पाबासर रै पावटै इसो इमरत जल पीयो कै वा अणबुझी तिरस री तडप सू आखै जमारै तडपती रैयी। कविया लिछमणदान जी रै 'पाबासर' मे भी उण स्वाद नै चाखणै री मनस्या ही। पण अठै इमरत जल सू निरवाली भात भतीली बानग्या मिली ज्या री सरसता अर सारम रो जायको ही न्यारो है।

आज राजस्थान मे डिंगल रा छदा री छटा निरजण मे समरथ कवि पेरवा पर गिणन जोगा ही कोनी। लिछमणदान जी नै आ सामरथ बापोती मे मिली जाण पडै। आपरी छदा री पकड सू कारीगरी रो बेरो लागै। डिंगल काव्य री याद न बणाई राखण सारु इसी कोसीसा जरूरी है। जूनै राजस्थानी साहित्य मे सू जे डिंगल नै छोड दी जावै तो बच काई! इण वास्त भी डिंगल री विधावा मे लिखणो लाजमी है।

इण पोथी रा विसय परम्पराऊ हाता थका भी सास्तरा म बखाणीज्योडा वरणना रै सैताल मानीजसी। कुदरत री कारीगरी, सूरा-दातारा री बहादरी अर दरियादिली अर हर जुग मे हर वखत सुहाती सिणगार रस री सरसाई अर सारम म टकसाली साहित्य रो ओलख आवै।

नयै ढालै री नई कविता जठै आपर ढग मे हुवणी जरूरी है वठ कदामी रचनावा नै भी नय सिरै सू ओजू माडणै अर परखणै-सराहणै री जरूरत भी है। कविया लिछमणदान जी नै डिंगल अर सत साहित्य रा प्रेमिया री सद्भावना अर सहजोग मिलसी तो घणो भला काम हुसी।

रावत सारस्वत

वेला - वल्लरी

भमाल

रुत वसत आई रसा, हरख अवर हुल्लास ।
फबै विरछ फळ फूलडा, वसुधा विविध विलास ।।
वसुधा विविध विलास वेल गळ वाहडी ।
लागै आछी लोक छिना पर छाहडी ।।
जगत अलभ्रत जोर वनस्पति विस्तरै ।
घणी भ्रमर गु जार लगाव गस्त रे ।। 1 ।।

रुत वसत सागै रही, मचियौ फागणमास ।
नव सिणगार धरा नखै, जोवन आणद जास ।।
जोवन आणद जास छीण पत छाडवै ।
पत्ता हीणा पेड कू पळा काढवै ।।
विरहण मन विसराम पलक नी पावसी ।
कोयल कर कर कूक क हूक उठावसी ।। 2 ।।

आम्र जामून आवळा, पळै नारगी पूर ।
नीम सुपारी नारियळ, खळी महुआ खजूर ।।
खळी महुआ खजूर करौंदा केळिया ।
लीची मरीफा लोग क मीजा मेळिया ।।
कटहल वडहल कीत जजीरी जायफळ ।
रचिया मचिया रूख सेवना व्ही सफळ ।। 3 ।।

ना वेलडी घणा लदी, फूला फळाज फेर ।
थई ससार मे, मान वसती मेर ।।

वेळा वल्लरी

भमाल

रुत वसत आई रमा, हरख अवर हुल्लास ।
फबै त्रिरछ फळ फूलडा, वसुधा विविध विलास ॥
वसुधा विविध विलास वेल गळ वाहडी ।
लागै आछी लोव छिना पर छाहडी ॥
जगत अलन्नत जोर वनस्पति विस्तरै ।
घणी भ्रमर गुजार लगाव गस्त रे ॥ 1 ॥

रुत वसत सागै रही, मचियो फागणमास ।
नव सिणगार धरा नखै, जोवन आणद जास ॥
जोवन आणद जास छीण पन छाडवै ।
पत्ता हीणा पेड कू पळा काढवै ॥
बिरहण मन बिसराम पलक नी पावसी ।
कोयल कर कर कूक क हूक उठावसी ॥ 2 ॥

आम्र जामून आवळा, पळै नारगी पूर ।
नीम सुपारी नारियळ, खळी महुआ खजूर ॥
खळी महुआ खजूर करौदा केळिया ।
लीची सरीफा लोग क मौजा मेळिया ॥
कटहल वडहल क्रीत जजीरी जायफळ ।
रचिया मचिया रूख सेवना व्ही सफळ ॥ 3 ॥

लता वेलडी घण लदी, फूला फळाज फेर ।
सौरभ थई ससार मे, मान वसती मेर ॥

मान वसती मेर केतकी कवटा ।
कूजा गुलाब कुन्द वरगसद केवडा ।।
चम्पा निवरी चमेल व करना केमरी ।
मानती मल्लिका स्वेत सुगन्ध विसेम री ।। 4 ।।

मेळ वसती मरुधरा, सोभा ऊमी सजाय ।
भीगी रेत गुलाल ज्यू, उड उड मेडी आय ।।
उड उड मेडी आय नीर कम नाडिया ।
खेजड नीव वबूल क कू पळ काटिया ।।
फागण गाता फिरै, छवीला छोकरा ।
चग वजावै चाय डुळै मन डोकरा ।। 5 ।।

चिणा गेहू हरिया चहर, धाणा सौरम धार ।
सिरसू रा पीळा सुमन, ओप रया इकसार ।।
ओप रया इकसार क जीरो जोर मे ।
राइ रायडै राम दिखै सुभ दौर मे ।।
धरती गहरी धान क खुसिया खात मे ।
कर मैगत किरसाण भाग ले हाथ मे ।। 6 ।।

हरिया मह माखर हुवा, सोभा देत सवाय ।
इळा हरी जिम ओरणी, ओढ'र ऊभी आय ।।
ओढ'र ऊभी आय छरी नद छोर मे ।
वन लहराय वसत प्रभा अठ पोर मे ।।
कर रह्या किलोळ क पछी प्रात मे ।
सीतळ वह समीर सुगधी साथ मे ।। 7 ।।

सारस कपोत सारिका, चातक चास चकोर ।
कोयल खजन कागला, हसा लेत हिलोर ।।
हसा लेत हिलोर क्रौंच सुक कुडरा ।
लीवा भ्रमर नावक नेलाक वक वला ।।

मदन साल टिकमोर हारीज हुलासिया ।
कुरज तीतर कारट वसत विलासिया ।। 8 ।।

व्याघ्र वराह व्याल वरु, सावर खर सारदूळ ।
सियाळ गोमायौ मरभ, बानर विघ्ना मूळ ।।
बानर विघ्ना मूळ क चम्मर चीतरा ।
जरख रीछडा जोर पसु नही प्रीत रा ।।
मिरग हस्ती महीस वणेटी वरगडा ।
रे मस्ती रितुराज क जगळ मे जडा ।। 9 ।।

मलयाचळ मुक्तागिरा, हेमाळी हिमवत ।
अस्ताचळ अचळ अरबुदा, वाल्ही लगै वसत ।।
वाल्ही लगै वसत विंध्याचळ वेवता ।
वेताढ उदयावास क रूपी रेवता ।।
कूट चित्र श्रीकूट धोळगिरी गोरधन ।
नीळगिरी नेसद्य कळा केळास वन ।। 10 ।।

गगा जमुना गोमती, रक्तवती कुळरूप ।
सोवन भद्रा सुरसती, सिप्रा सिन्धु सरूप ।।
सिप्रा सिन्धु सरूप, गडक गोदावरी ।
माही चम्बळ माळ किसणा कावरी ।।
विरमपुत्रज बनास ताप्ती ताज मे ।
मन्द गति जळ माय रही रितुराज मे ।। 11 ।।

फागण मास वसत फळ, विरहण रै दुख वास ।
चदौ बाळै चामडी, सारा लहै न सास ।।
सोरा लहै न सास बावड्यो बोलवै ।
दिल ऊपर दुधार छिनौछिन छोलवै ।।

भोजन नाही भाय काय कुमळायगी ।
वेरग इमी वसत छिना पर छायगी ।। 12 ।।

पूजै विमळा पचमी, विद्या सुमत विकास ।
सिवराता आला सफळ, अनुरागी उपवास ।।
अनुरागी उपवास गाईज गीतडा ।
फागण मस्ती फेर रसम अर रीतडा ।।
वेळा इमी वसत नेह पय सूझवै ।
घर नारी गिणगोर प्रेमसू पूजवै ।। 13 ।।

खाकड सूखी घास वित, नाडा निठनी नीर ।
केर सागरी साग कर, भोजन जीमौ वीर ।।
भोजन जीमौ वीर रायतौ रावडी ।
रुखा भरिया रोट छोकरो छावडी ।।
नीरण वाडै नायक पसु थकिया परा ।
मेळ वसतो अेम मानियै मरुधरा ।। 14 ।।

लोकै उतरण लागियो, मास चेत घण मान ।
तपती वधी वसन तज, धरियौ ग्रीखम ध्यान ।।
धरियौ ग्रीखम ध्यान क दीरघ दीहडा ।
लघु राता मे लाभ छवी दिन छीहडा ।।
रे बीतौ रितुराज क ओळू आवसी ।
सह रत मे सिरमाड वसत सु भावसी ।। 15 ।।

रामनमी तप नोरता, पग ग्रीखम परवेस ।
मीख लही वसत सुख, दाफ ग्रीखम देस ।।
दाफै ग्रीखम देस निसा ठड नीसरै ।
गहरी नीद धुराय क माथी सोस रै ।।
दिन तपता दोपार क सिझ्या सातरी ।
प्रात समै भरपूर क आभ अेकात री ।। 16 ।।

चेती गरमी चेत मे, उत्तरचा बढगी ओर।
अवेर रह्या उनाळिया, जोरौ गेहू जोर॥
जोरौ गेहू जोर क रातौ रायडौ।
वाटए दाम वजार क करसौ वायडौ॥
भर गेहू भण्डार कोरड् काढवै।
समझदार किरसाए क गरिमा जाडवै॥ 17॥

वेळा सादी व्याव री, महिमा ग्रीखम माय।
सोरी हुवै मगाइया, देखौ ग्रीखम दाय॥
देखौ ग्रीखम दाय क जाना जोर री।
भूला किम वैसाख वाय री भोर री॥
सद नव जुडता माख क गाळ गिनायता।
खरचा खाता खूब क महिमा मायता॥ 18॥

मरुधर मे भूखा मरै, चारा विन पसु चाम।
सजळ नाडिया सूखगी, गुजर रह्या दिन गाम॥
गुजर रह्या दिन गाम क मोळौ मानखौ।
फोडौ तोडौ फेर क धीएा धान को॥
गाया भैस्या गोर व चाटै चाम नै।
हाडक निकलचा हाय! रहम ना राम नै॥ 19॥

ब्याज कमावै वाणिया, मौदा साहूकार।
अड अड दहे उधारिया, अरज कराय अपार॥
अरज कराय अपार गरीबा गौर ना।
भूख टावरा भाग जुगाडा जोर ना॥
होवै सोसए हाय निरधना नाम री।
देखौ सकल ससार दिप प्रभ दाम री॥ 20॥

आविया वैसाख अरध, तपती वदळै तोर।
प्रात साझ सुख पायलो, दोपारा दुख ᳚᳚॥

दोपारा दुख दोर छिया ना छोडणी।
लूवा लागी लौर क ग्रसकी श्रोढणी।।
ठडा पींरा ठीक तेज कम तावडौ।
मटकी ठडी मीत नीर ढिग नावडौ ।। 21 ।।

छानड झू पड छाविया, तपती यू कम ताय।
निरधन रैं साधन नही, श्रोहो अेक उपाय।।
श्रोही अेक उपाय क जीगै रावडी।
कादौ खावौ काट क रोट्या छावडी ।।
ठड मटकै ठीक क पाणी पीवणौ।
ग्रीखम माय गरीवा इण विध जीवणौ ।। 22 ।।

धनवाना साधन घरा, खरा मौज रा खाण।
हाचा भवन हवेलिया, गरब करै गुजराण।।
गरब करै गुजराण क कूलर कोड मे।
घूमण कार धराह हुकमी होड मे।।
वातानुकूल विलास ठडाई ठाट री।
सिकंजिया सरवत्त क चीजा चाट री।। 23 ।।

खाट राळियौ खेतडा, किरसाणा कुसळात।
श्राखातीज सु श्रायगी, सुगन हळोत्या साथ।।
सुगन हळोत्या साथ क खडवै खेतडा।
मजनौ करती सूड क हूनर हेतडा।।
घर मे दूज गोळ श्राय लै श्रासरौ।
गहरी नीद घुराय क वपुज विकाम रौ।। 24 ।।

रळनी वाजे वारणं, तपती भीतर ताय।
ग्रीखम दारी गावडा, मरुधर थळवट माय।।
मरुधर थळवट माय क बाजै वायरी।
सूनी सडका महर करै रिछ्या राय री।।

उडती रेत आकाश दिनकर न दीखवै ।
वळ तळ तौ वैसाख सुनिजरा मीख वै ।। 25 ।।

जेठ मास तपियौ जबर, खबर लही ना खेर ।
चितव लहै चपेट मे, लागी लूवा लेर ।।
लागी लूवा लेर रिक्त मह रासना ।
तपियौ सूरज तेज घट्टत गुमासता ।।
टरती छिया दोपार लुकणा लोक मे ।
दुरलभ वळती देण क चलणौ चोक मे ।। 26 ।।

पख्या हाथा मे पकड, वर घर रह्या घुमाय ।
वाता मे चित ना भळै, सबनै तपत सताय ।।
सबनै तपत सताय क डाडै डोकरा ।
मोठा रस मोट्यार क छीज छोकरा ।।
घाम पसीनो चवै क गारी घू घटै ।
भूल गया म्मै भूख तिस जळ ना मिटै ।। 27 ।।

मिरग दुखी ग्रीखम मही, तपती वाळू ताय ।
भरण चौकडी भूलगा, ऊभा मेजड श्राय ।।
ऊभा मेजड श्राय क टळगा टोळिया ।
रीछ वानरा रोझ क छोडी छोळिया ।।
व्याकुळ व्है वनराज न सूझ सिकार री ।
सहन करा किम सूळक ग्रीखम मार री ।। 28 ।।

राळ रही तप रोहिणी, हिरणी व्याकुळ होय ।
भू डी हालत भैसिया, सुर भी दुखिया सोय ।।
सुर भी दुखिया सोय नीर ना नीरणी ।
नैणा झरतौ नीर गोड रेतड घणी ।।
धणिया नाही ध्यान रामजी रूसगौ ।
गाळ जेठ अति कठण खून चित चू सगौ ।। 29 ।।

पछी प्यासा पाणिया, उडणो भूल्या आज ।
पडिया ओठै पेड रै, पेख परी सर पाज ॥
पेख परी सर पाज क दुर लभ दाणिया ।
भूल्या करण किल्लोळ क छोडो वाणिया ॥
मास जेठ अधमाय क मोळी मरधरा ।
सारा खूट्या सज क प्राणी पाधरा ॥ 30 ॥

वाजया साडी पाच वस, ऊगै दिनकर आय ।
नी वजिया सू नासती, छिताज गीखम छाय ॥
छिताज ग्रीखम छाय दोपारा दाभवै ।
ठडा पोर न ठड लोक मे लाजवै ॥
वजिया साडी सात अरक चल आथवै ।
निसा ठड अव नाय क ग्रीखम गाथवै ॥ 31 ॥

दाभै वळती देह नै, बाजै मिरगा वाय ।
व्योम इळा अव बाय सू, आंधी मे अधळाय ॥
आधी मे अधळाय खेह भर खेतडा ।
बहता पथ विचाळ रळै सिर रेतडा ॥
चख भरिया घण चाय क वाळू वाय री ।
मग फिरवै मजबूर केम रिछ काय री ॥ 32 ॥

मीतळ कुच अर मुख ससी, वेणी सीतळ बास ।
भेटया इतरा भागिया, सोरा ग्रीखम सास ॥
सोरा ग्रीखम सास क सोरभ सातरी ।
मावर रै ढिग मेळ व्यथा विण वातरी ॥
मग मोळा सिणगार सरद ही साजवै ।
रे सोरा दिनरात देह नी दाभवै ॥ 33 ॥

वेग्ण विरहण री वणी, ग्रीखम बेळा गेह ।
वळनी भीतर वार सू, देखो दाभै देह ॥

देखो दार्फ़ै देह क तिमणा तेजव्ही ।
सोता रात सवाय सूळ सम सेजव्ही ।।
व्योम सुधाकर वास विस वरसाविया ।
नैणा बहवै नीर क ओळू आविया ।। 34 ।।

गिण गिण दिन दोरा घणा, निकळै ग्रीखम नाम ।
जेठ उतरतै जीवडा, कोजौ तपती काम ।।
कोजौ तपती काम आसाढ आवियौ ।
ऊमस थई आकास हियौ हिलावियौ ।।
घट छावै घटराट अमूझै अग मे ।
सुगन रुपी न समीर रै तपती रग मे ।। 35 ।।

विरखा हीणौ बीतणौ, ओ विकराळ असाढ ।
जागी व्याधी जीवडा, जग छायौ दुख जाड ।।
जग छायौ दुख जाड मरै पशु मोकळा ।
पछी बिन पाणीह खुटै हुय खोखळा ।।
धीरज वाळा धीर छिता पर छोडियौ ।
दुख री खद्दर दीह आसाढ ओडियौ ।। 36 ।।

बिन विरखा आसाढ वस, जागै व्याधी जोर ।
नीर अन्न अरु नीरणी, काटी खाली कोर ।।
काटी खाली कोर क आय उबासिया ।
कडणा दिन्न कठिण क मरुधर वासिया ।।
नेडी विरखा नाय क ठडौ वायरौ ।
टावर भेंस्या टाट घणौ दुख गाय रौ ।। 37 ।।

सूतौ ऊगै दूज ससी, हाकौ सारै होय ।
त्यारी आ काळा तणी, कारी लगै न कोय ।।
कारी लगै न कोय क ऊमस आतरी ।
सीतळ रात सवाय व्यथा हर भातरी ।।

वावड्यौ कित वळचौ व्योम ना वोलव ।
श्री इसडो श्रासाढ क छाती छोलवै ।। 38 ।।

इन्दु दूज श्रासाढ री, ऊभी जँ ऊगन्त ।
ऊमस थाय श्रावास मे, हिव किरसाण हसन्त ।।
हिव किरसाण हसन्त क हळिया हाथ मे ।
गावै तेजो गीत प्रात चल पाथ मे ।।
नाड्या श्रायौ नीर क वावै वाजरी ।
श्राभ थई इळ श्राज क गिगना गाजरी ।। 39 ।।

चैत वैसाख जेठ चळ, श्रौर इसौ श्रासाढ ।
ग्रीखम ताया गावडा, हिलिया सहरा हाड ।।
हिलिया सहरा हाड क भारत वासिया ।
मरुधर ग्रीखम माय पडै गळ पासिया ।।
मोकै सजरौ मान जरुता जाणियै ।
विरखा ग्रीखम बसु, प्रताप पिछाणियै ।। 40 ।।

खादर भरिया खलक मे, श्रादर मास श्रसाढ ।
भा वरसाळे पुनरवसु, काळ कूट दे काढ ।।
काळ कूट दे काढ पुख्या परनाप तै ।
सावण वढियो सीर जटी कै जाप तै ।।
श्रालय ललना ऊभ क नयण निहार मे ।
इसटा कर उडीक सजी सिणगार मे ।। 41 ।।

विधू वदन वाताय चख, गरिमा छाई गेह ।
रम्भ नासिका श्रधर रदन, दामण कामण देह ।।
दामण कामण देह नगे चित लालसा ।
चिकुर नागणी चाल पयोधर पाळसा ।।
कग कुसेसय कान क मावर मेळिया ।
सरली सावण तीज करावत केळिया ।। 42 ।।

असळे का वूठा इळा, जण जण व्याधी जोय ।
वाढा थई बसुन्धरा, हाणी जवरी होय ॥
हाणी जवरी हाय टूटगा टापरा ।
पसु वहिया परिवार महि अणमाप रा ॥
जणणी रोती जाय क बेटौ वेयगौ ।
अंतरजामी आज लोक सुख लेयगौ ॥ 43 ॥

वढियौ जबरो वाजरो, कछु न मोठा काण ।
तिल ज्वार गवारा तणा, नहचै करो निदाण ॥
नहचै करो निदाण हरख हरियाळिया ।
गहरौ वढियौ घास क धोरा पाळिया ॥
खोळ लावणी खूब ठेह भर ठाण न ।
गाया भैंस्या गोर क ऊभी खाण न ॥ 44 ॥

राखी माखी गीत री, हिन्दू धरम हमेस ।
भाई रिच्छक बहन रा, दीपै कीरत देस ॥
दीपै कीरत देस क बिरखा बूभवै ।
जलम आठम जहान प्रेम सू पूजवै ॥
झडिया लागी जोर पट्ट सीळा पडै ।
मोटा चवै मयान गुलिक झू पड झडै ॥ 45 ॥

भादव झडिया वापरी, मेळो गिरिसर माय ।
ऊंट बैलिया अस्व इत, वेगा मेह बिकाय ॥
वेगा मेह बिकाय क गोगो गाव रो ।
खावण सेवा खीर क मेही नाव रो ॥
सुकळा ग्यारस साथ जळासय झूलणो ।
नेकी सू रख नेह भगवत न भूलणो ॥ 46 ॥

भरिया सरवर भादवै, हरिया तरवर होय ।
पसु चरिया भर पेटडा, मोरा करिया सोय ॥

सारा करिया सोय किरसाण कोड में ।
समझ जमाने साख क हाले होड मे ॥
वे छव भरिया बान्ध साधन सिंचाईया ।
श्रौ है काळ उपाव कराय कमाईया ॥ 47 ॥

परवाई बाजै परी, मास भादवै माय ।
विसधर लहरावै विविध, डोल्या खेत डराय ॥
डोल्या खेत डराय क गहरा घास मे ।
बाजर वढियो वोत जवारा रास मे ॥
फूला तिल्ल फजाय महिमा मू गडा ।
मक्को मूग फळीह तारीफ नक्कडा ॥ 48 ॥

बिरखा धीमी यू भई, आय गयो आसोज ।
साद विरामण सराद मे, चाय माल वेचोज ॥
चाय माल वेचोज अन्य विसवास म ।
हिन्दु सस्कृति हाथ पुजावत पास मे ॥
नोरता देवी नाव घणो पूजन कियो ।
ऊगै तारो अगस्त मेह घर पूगियो ॥ 49 ॥

विजय दसमी उछव विविध, देह रावण दजाय ।
सरद पूनम तणी ससी, व्योम सुमन वरसाय ॥
व्योम सुमन वरसाय खीर ग्ख डागळ ।
मेलो वार मतीर अरोगो साक्ळै ॥
उतर गयो आसोज र वाती कोड मे ।
साख पीछम ममोर हाल होड मे ॥ 50 ॥

पावस रन जाती प्रभा, हाजर ओस हमेस ।
मोहना मानो मायने, पय सरदी परवेस ॥
पय सरदी परवेस प दीपे दीवला ।
आणद घर घर आज घुटै गुड घीवला ॥

घर घर करली घणा साफ सफाईया ।
लिछमी पूजत लोक क मेळ मिठाईया ।। 51 ।।

ओठै मोवण आविया, मझ काती रै माह ।
धीरा पग सरदी धरै, डरपै डोकरियाह ।।
डरपै डोकरियाह मसोडा मायनै ।
पग पग जुगती पूर करै रिछ्याय नै ।।
सबद सरद रौ सुणत कापवै काळजा ।
डर डर बोलै डंणा रजाई राळजा ।। 52 ।।

मेह्यौ पोकर मरुधरा, मरदी रौ मदेस ।
नीर हिलै घण नावता, पुन्याई परवेस ।।
पुन्याई परवेस ता पचतीरता ।
लहरा सरदी लेय बेगली बीरता ।।
करै जीवडौ कवण सरद सू मामनौ ।
साधन लिया ममाळ उपै नह आमनौ ।। 53 ।।

मिगसर लाग्या मानियै, जवर सरद रौ जार ।
लाटा काई लोगडा, देखा तप रौ दोर ।।
देखा तप रौ दोर दिलासा देवणा ।
नर सोयै नजदीक क लाटा लेवणा ।।
माचै रजाई मेल क काधै केसलौ ।
घर सू नाही घणौ फिरता फेसलौ ।। 54 ।।

आधौ मिगसर ऊतरै, उनाळी प्रभ ओर ।
सरसू चिणा गेहू सरव, जाण रायडै जोर ।।
जाण रायडै जोर हुई हरियाळिया ।
फववै पीळा फूल भरै हिव भाळिया ।।
मिरच रही मुरजाय क पूरी पाकवै ।
जीरौ उगत जाण क तर तर ताकवै ।। 55 ।।

पौ लागा धरती परं, कीनौ सरदी कोप ।
हिलणौ चलणौ ना हुवै, रै दीना पग रोप ।।
रै दीना पग रोप क वाजै वायरी ।
दिन रा ही दपटीज करा रिछ कायरी ।।
छिया भागवा छोड तुरता नावडं ।
विन कामळ रै वार अवै नीं आवडं ।। 56 ।।

घर ऊडं सूना घणा, पछै रजाई पास ।
करडी सरदी कारणै, गूदड ना गरमास ।।
गूदड ना गरमास क गोडा घेरिया ।
लीयौ मूड लुकाय हाथ ना हेरिया ।।
दिन चढिया दोपार छान नै छोडणौ ।
सरदी री सदेस ऊपरा ओडणौ ।। 57 ।।

वजिया ऊगै इण वगत, सूरज साडी सात ।
पौर हेक सरदी प्रभा, घालै तन पर घात ।।
घालै तन पर घात दुपारा दीनवै ।
तावड सरण तिहार लोग म्स लीनवै ।।
ठडा पौरा ठड कोप लोकै कियौ ।
अस्ताचल दिस अरक पाच वज पूगियौ ।। 58 ।।

साझ पडी भडिया सवै, ऊड भू पट आज ।
पौस रात ठटी पडं, करा न बाहर काज ।।
करा न बाहर काज चाम नै चीर वै ।
जमगौ पाळौ जेम नाडिया नीर वै ।।
रोम कियौ अधरान क नडकौ नायगौ ।
सरदी री सरणाट छितौ पर छायगौ ।। 59 ।।

धर थळवट पीठम धरा, सेखावाटी साथ ।
मरुधर म सरदा मुजब, हाथा मारै हाथ ।।

हाचा मारै हाथ मरद रै माकडी ।
छिन भर दहै न छूट इळा पर ग्राखडी ।।
जतन सरीरा जोर रामजी राखसी ।
वस ना मिनखा बात क मरदी गाखसी ।। 60 ।।

हालै ठड हिमाळ सू , वाजै उतरी वाय ।
भरणा कापै थळवटा, मरुधरियो मुरभाय ।।
मरुधरियो मुरभाय ठड री ठोकरा ।
सरदी लागी मॅग छोकरी छोकरा ।।
निकळै घर सू नाय बूढियो वारणै ।
जोबन मिनखा जोर कमी इण कारणै ।। 61 ।।

डग्ता मरदी डोकरा, सन्निरणा सधाय ।
ताता भोजन पौस तू , राजी त्रिन रधाय ।।
राजी विन रधाय साच सकरात मे ।
वडा तिरनडा बीच खीचडो साथ मे ।।
गुड तेला रा घणा चाडजै चूरमा ।
भोजन विविध वणाय सजोगी सूरमा ।। 62 ।।

वेल्या सरदी सू बचण, ओला निरधन ओड ।
झूला धनिका जोर री, ठीक पायगा ठोड ।।
ठीक पायगा ठोड गोर री गावडी ।
भैस्या ऊभी बीच क देवण डावडी ।।
किरसाणा रो कोड धन ओ धानही ।
इण कारण ही ग्राज मनीजै मान ही ।। 63 ।।

पौस मास परताप सू , रै मचियो घण रोग ।
माचै सूता मोकळा, जवरो सरदी जोग ।।
जबरो सरदी जोग डोकरी डोकरा ।
वचिया जुवा न बीच छोकरी छोकरा ।।

वेदा घरै वदाए य करै कमाईया ।
हुयगी हालत हाय ! क भूडी भाईया ।। 64 ।।

ताय ताय सरदी तदिन, परो बीतियो पोम ।
धीमो अब पडियो धरा, जाएक सरदी जोम ।।
जाएक सरदी जोस, महीनो माघ रो ।
आवे धवरा ओर भविस र भाग रो ।।
दिनकर रो दरसाव पोर नी ठा पडै ।
लुकगो धूवर लार वयल डर वापडै ।। 65 ।।

दारा भडिया देवती, पापड वटती पास ।
राध परी रावोडिया, खिचिया सूखै खास ।।
खिचिया सूखै खास मास पो मायन ।
सज करै घए साग चितसू चायन ।।
कम खरच मे काम चलावए चावना ।
करजो दूर कराय भामएी भावना ।। 66 ।।

मरुधर वरसै मावठो, सायँ सरद समीर ।
छोखा छोखा छोडियो, धीरज वाळा धीर ।।
धीरज वाळा धीर सरद सू सूखगा ।
फट दी सरदी फेट चेतएा चूकगा ।।
निरबळ भूडो नूर क चिपिया चामडा ।
हाथ पेर अब हाय ! करै ना कामडा ।। 67 ।।

परएी घर व्है पौस मे, साची ओडए सज ।
सेवन भोजन सातरा, भाग्या पडै न भज ।।
भाग्या पडै न भज सियाळै सात रे ।
पेरए बाघा पूर वऊ नित चात रे ।।
पुरसारथ पर भाव जमी अन जोर मे ।
मिनखा राखै मेळ क ठोरम ठोर मे ।। 68 ।।

माघ महिनो मानखै, सरद न अधिक सताय ।
पतझड लागो पेड नू , झड झड पत्ता जाय ।।
झड झड पत्ता जाय क रुखा रुखडा ।
दरखत भूडा दरसण टोई टूकडा ।।
रै श्रावै रितुराज छिता वन छावसी ।
कोयल करै किलोळ आणद आवसी ।। 69 ।।

जाती सरदी जोर सू , छोडै अपणी छाप ।
नागौरी पसु नाव रो, मेळो करै न माफ ।।
मेळो करै न माफ क लाखू लोगडा ।
सरदी रही सताय क टाडै टोगडा ।।
गुरला ऊटा गाज हय हिणहिणाट वै ।
वेल्या फूदा बन्ध क नामी नाटवै ।। 70 ।।

अेक झलक देखा अवर, सिवराता सजोग ।
बची कुची इसडै वगत, लेवै सरदी लोग ।।
लेवै सरदी लोग क फागण फेलियो ।
गहरी उडै गुलाल क जोबन झेळियो ।।
ढमकै पाच्यू ढोल क ठमको ठायगी ।
होळी साथै हमे क सरद सिधायगी ।। 71 ।।

गरमी री महिमा घणी, पावस आभ अपार ।
जीणो होवै जगत मे, बिन सरदी बेकार ।।
बिन सरदी बेकार तपत घण तायलै ।
पकै न फसला पूर कमो रुज कायलै ।।
बरसै ना वरसात वसत न वापरै ।
दीज्यो सरदी देख जपा हरि जापरै ।। 72 ।।

बिणास - बावनी

बेलियो

छिया फिरी जेठ दुपारा छिपती, अधिक अरू तपनी आसाढ ।
बगो आस बरसण री भारी, वहसी कुण जाणी ही बाढ ।। 1 ।।

सावण लाग्या रै ईं माग, अह वणिया बिरखा अहनाण ।
सप्तमी मानसून रै सेती, पूगी मरुधर धरा प्रमाण ।। 2 ।।

सज धज न आयो घण साजन, तपती धण धर मेटण तास ।
मुसळाधार बरसियो मेहो, सोख नीर धर सोरा सास ।। 3 ।।

हरख रया मिनखा रा हिवडा, सावण माखा होसी सीर ।
हाल्या लै खेता मे हळिया, विरखा तळिया जाता वीर ।। 4 ।।

बीती आठम आयी बरसत, परसत साखी जळा प्रमाण ।
नवमी गजब धार जळ नाखी, दसमी डाकी पणी दिखाण ।। 5 ।।

बरसै रात दिवस तिथ भूखी, बारस चूकी नही वहाण ।
बाया मिया तेरस धर कूकी, धू की चवदस विघन धराण ।। 6 ।।

चालू कियो राज जम चाळो, बरसाळो बरसै विकराळ ।
मरुधर धरा मुसीबत माडी, पावन्दी छाडी घण पाळ ।। 7 ।।

आठम सू अमावस आखी, बरस बरस नै भरिया बन्ध ।
फूट्या बन्ध नीर घण फेरयो, फन्दै दीधा जम रै कान्ध ।। 8 ।।

लेखो लहा विणासी लीला, सरतण ढोला पड़वै सग ।
हिवडो बळै नैंग जळ हाल्ै, देखो माल विधना दैण ।। 9 ।।

पाणी रा फोडा घण पेली, जळ अन्न सेली झाया झोक ।
किण नू कहा विधाता कोपी, नापी विरखा मरुधर लोक ।। 10 ।।

बन्ध पिच्याक तोडिया बन्धण, किया खाख सधण रा काम ।
फेल्या नीर लागिया फन्दण, रुदण सोर जागिया गाम ।। 11 ।।

भावी अवर विलाडा भूमी, चावी हुयगी विधना चेत ।
परबळ वेग पिच्याकै पाणी, दाणी दुख हाणी घण देत ।। 12 ।।

मोटी पाळ टूटणी मुसकल, जाण न सकिया पाणी जोर ।
पोढ्या मसत गाव पाडोसी, रातू सूना ओढ्या रोर ।। 13 ।।

धण डीकर धाम अन धावा, थिर चावा कीकर नह थाट ।
जाण्यो कुण सूता रह जास्या, वहजास्या पाणी रै वाट ।। 14 ।।

आ नामी माटी उपजाऊ, साऊ वहगी पाणी साथ ।
पोची आय गई धर परती, खूट गयो धरती री खात ।। 15 ।।

खाडा घाल दिया खेता मे, कस रेता सू भरिया कूप ।
विधना किरसाणा हिव वाळै, रस विरखा बिकराळै रूप ।। 16 ।।

आछा धान किया उपजेला, मुसकल बरसा केई माण ।
वे दिन कद पाछा आवडसी, आवडसी खेता हर आण ।। 17 ।।

चाल जळ हुयन घण चोडै, तोडै सडका अवर तळाव ।
ठावा न तरवर रूंख ढहिया, बहिया विहग पसु बहाव ।। 18 ।।

आडावळ परवत सू ऊठी, लूणी लूठी त्रणवै लोक ।
खमा दमा टाकन खूटी, थळ रूठी चूटी सज थोक ।। 19 ।।

डमरूनाथ हिमाळै डरियो, करियो लूणी मरुधर काप ।
पूरा बरस तीस रै पाछै, लूणी खाचै रेखा लोप ।। 20 ।।

छत्तीसौ लूणी नैं छेडी, भभेडी सूती मैं जोय ।
नागण फिरी मीबरी नागी, सू तण लागी आपैं सोय ॥ 21 ॥

रमतैं वहती न रीसाई, नद आई राता कर नेण ।
भागैं भरम छत्तीसैं भारी, लूणी मगत मारी लण ॥ 22 ॥

लिखता लेख विणासी लीला, हत ढोला कलमा रा हाय ।
थळ जागा जळ जळ ही थायौ, सुमन मरुधरा कुमळैं सोय ॥ 23 ॥

जळाकार कर दीनौ जोरा, अठपोरा वरसण री आभ ।
लूणी तणी सिकायत लू ठी, खू ठी टाक दिया नर ख्वाब ॥ 24 ॥

पूगौ नीर परगनैं पाली, जोत्राणी झाली दुख झाद ।
वायडमेर धरा नह वगसी, लूणी रगसी हरण ललाट ॥ 25 ॥

दाता पसु बिना जळ दोरा, खोरा ढोरा पाता खीच ।
सासा उनाळै घण सहिया, वहिया अव पाणी रैं बीच ॥ 26 ॥

उनाळैं भस्या अरडाती, पाणी विन जाती दुख पाज ।
सट वहती पाणी सरडाटै, अरडाटैं चढगी जळ आज ॥ 27 ॥

तिरणौ भूल गई जळ तेजी, हेज्योडी पाडी रे हेत ।
अड पाडी लेगी जळ आग, खोडा अवर न रुकिया खेत ॥ 28 ॥

धीणौ खूट गयौ घर धणिया, बणिया खोटा हाल विणास ।
बाछ्या न गाया घण वहगी, ऊठी कहगी अजळ आस ॥ 29 ॥

वळद ऊट लूणी मे वहगा, जूणी फिरसाणा दुख झेल ।
झौडा भर जीव किलबिलिया, मलिया धर धणिया हत मेल ॥ 30 ॥

सरवर फूट फूट व्हे सीवा, तरवर तूट तूट वह तेज ।
पछी वण वहन्ते पाणी, सूता वेय गया मृत सेज ॥ 31 ॥

गहरी नींद सूतोडा धर मे, जोडायत टावरिया जोड ।
चढिया नीर हियोळैं चितव, ठह लेगौ जळ मोटी ठाड ॥ 32 ॥

प्रभा मायड टावरा पेखत, देखत गया जळा री दोट ।
टाळ लिया लूणी टावरिया, लाडणिया रहिया जळ लोट ।। 33 ।।

वामा पिऊ पिऊ कह वहगी, प्रीतम ने दहगी घण पीड ।
स्सै परिवार वहै घण माथै, भरणगी सुरगा मावै भीड ।। 34 ।।

मलवो व्ह आछोडा म्हेला, थोडा कै भू पडिया थाग ।
अेवाडा वहगा जळ आगै, भाग गया अेवाळया भाग ।। 35 ।।

धन रौ कवरण जापतौ धारै, तन री पडगी खेचा ताण ।
लूणी साथ सवा नै लेगी, हा देगी अणहूती हाण ।। 36 ।।

लूणी लेय गई लाडणिया, लारै रिया लडावणहार
जिगड गयो केया वूढापो, वापो न केवणिया वार ।। 37 ।।

सारै जलम सू मपण सहियौ, दहियौ ना मगता नू दान ।
वा अब जीव नीर में बहियौ, अर रहियौ गहियौ धन धान ।। 38 ।।

कहा किता दुख लूणी केरा, घेर्‌या वाढ घणरा गाव ।
मरुधर नै जळधर कर मोणी, दुख दाणी पार्णी रा दाव ।। 39 ।।

निरा वहै मरुधर जळ नावा, चावा नह इसडी जुग चाल ।
इसडी भळ लूणी मत आजै, लाजेला करिया चख लाल ।। 40 ।।

भू भी दुखा धरा जालोरी, दोरी दसा सिरोही दीन ।
न वचियौ दुख सू नागाणी, मोणी डण म मेक न मीन ।। 41 ।।

मेहो वरस धरा मेवाती, माडी दसा कठेई माड ।
हुई हाण धरा हाडोती, कोतिन अरु वरिया जळ वाड ।। 42 ।।

किती वाढ नदिया रै कारण, दुखी दसा उत्तर प्रदेस ।
वची नही विहार घर वाकी, नाखो असम आफता नेम ।। 43 ।।

हेकट नीर सिचाई हेतू, बान्ध मोर बी री विख्यात।
भरियाँ नीर दिवारा भगी, रै छगी जगी गुजरात ॥ 44 ॥

सुरग्रालय वहगा नर सागण, जागण देती वही जमात।
बालम ग्रर वामा जळ वहगा, बोल न सकै पोछडाँ बात ॥ 45 ॥

टुळ वहिया पाणी मे टावर, लोही कूटत वया लुहार।
पिणयार्‌या वहगी परवारी, सोनौ घडता वया सुनार ॥ 46 ॥

वणिया सग दुकाना बहगी, वणिया सग बयौ धन धान।
मख महिया निसकारा भरता, कम्ता काज वया किरसाण ॥ 47 ॥

जप करता बहगा जळ जोगी, रोगी बया लिया ही रोग।
वहिया ततर मतर वादी, जतर रहिया किणी न जोग ॥ 48 ॥

हलकारै मालण जळ हाली, ग्याली बहगा करता खेल।
मसजिद सेती बया मुलाजी, साजी नीर दुखा री सेज ॥ 49 ॥

खोद दई गेता जळ खाया, गाया सेती बया गुवाळ।
टोगडिया घर मू जळ टोल्या, गेळया कोप प्रकृति गाळ ॥ 50 ॥

खोडा री लाठी जळ खोमी, ग्राधा री खोसै ग्राधार।
ममता रोय रही घर माही, मागी सरणाई साधार ॥ 51 ॥

कद कोप इसडो मत करजै, धरजै ग्रबै प्रकृत्ति ध्यान।
वेलियौ गीत छत्तीस विरचा, दाख्यौ कविया लिछमण दान ॥ 52 ॥

ग्रीखम - गरिमा

गीत प्रोढ

होळका दहण लोग हालै, सुणैं जातौ सीह ।
निसा श्रब छोटी निहारौ, देख मोटा दीह ॥ 1 ॥

चेत महिनैं गरमास चेतौ, अरा देती धूप ।
लावणी करवा लोग लागा, किया श्राणद कूप ॥ 2 ॥

अवेर लाटा घरा लोगा, भर लिया भण्डार ।
वरस रौ पहलौ मास वीत्यौ, गरम नाय गिनार ॥ 3 ॥

वेसाख ताई छडा विछडा, जाण खळाज जोग ।
दोपार तावड देख हरखत, लहैं सरणौ लोग ॥ 4 ॥

वेसाख श्राधो इया वीत्यौ, तपत लागी ताण ।
भास्कर तप धरती विलोकै, सनेही सहनाण ॥ 5 ॥

वेसाख राता चानणी उम, मुद्द विरहण मूक ।
वावइयौ पिव थोल वाणी, करा देवै कूक ॥ 6 ॥

चानणी राता माय चमकै, रजत जिसडी रेत ।
सिणगार निसा श्रनेक साजै, हियै चदव हेत ॥ 7 ॥

किलोल करवै चद कामण, मद विरहण मन्न ।
काढव राता सोय कोटड, खरी जागत खिन्न ॥ 8 ॥

सजोग विग्रना जेण सार्जे, तेण श्राणद तोर ।
बालमा सजनी वीच भाळो, हियैं नेह हिलोर ॥ 9 ॥

ताकता तावड होत तकडी, मकी ग्रीखम साख।
इण तरह कर कर धरा ऊपर, बीतियौ वेसाख ।। 10 ।।

तावडौ करता सहन तडफै, पथ भडपै प्राण।
विकराळ तपती जेठ भारी, हुवै त्यारी हाण ।। 11 ।।

मरवरा जीवा नीर सूखा, पसु भूखा न पान।
लोगडा भोजन खाय लूखा, घणी रूखा ध्यान ।। 12 ।।

चावना धीणा हीण चूटै, पसु खूटै ज पूर।
मुसकिला चारौ नीर मिलणौ, दिला भिलणौ दूर ।। 13 ।।

ग्रामाज भेस्या हुई ग्रोदी, जळ न होदी जोर।
मरधर महिनौ जेठ माडौ, तूट पुसकल तोर ।। 14 ।।

सचरै सोतौ विपद सामी, खळक खामी खाय।
ग्रठपोर चिता ग्राव ग्राणी, मणा ढाणी माय ।। 15 ।।

कातीसरै मे धान काढयौ, ग्रडी लागी ग्राय।
बाजार ससतौ धान बिकियौ, जेठ माडौ जाय ।। 16 ।।

विरमाण वणिया जायकहियौ, धणी दहियो धान।
साहूकार वणिया कर सोदा, धूरत ब्याज धिराण ।। 17 ।।

इण तरह भारत देस ग्राफ्त, भूख करसा भोग।
चराचर जीवा देख चिंता, जेठ इसडौ जोग ।। 18 ।।

इण तरह ग्राधो जेठ ग्रायौ, वजै विरगा वाय।
रोहणी तपती धूप राळै, तना बाळै ताय ।। 19 ।।

महन करता थाविया मारा, रवी कन्या रीस।
वेहाल ग्रर नर हुवा व्याकुळ, ऊवर्व भवनीस ।। 20 ।।

धनवान जतना हू त वीज, महल रीभ मन्न ।
धारणै निरधन लोग विलकै, तरस चिलकै तन्न ।। 21 ।।

छानडी ग्रीखम भली छाजै, तपत थोडी ताय ।
हवेली वीच धनवान हूता, रटै राम खुदाय ।। 22 ।।

वरसात हीणी जेठ वीत, खाय गहरी खीज ।
दोपार पेली रेत दाभै, चलत दोरी चीज ।। 23 ।।

दोपार इसा सूना दीसै, पथ गवाडा पार ।
अधरात पो री जेम आभा, पख जेठ दुपार ।। 24 ।।

सूनाड सहरा नगर सडका, भभकियो नभ भाण ।
दोपार मिनखा नाय दरसण, जेम करफ्यू जाण ।। 25 ।।

धोळपुर नगरी गरम धधकै, निजर बीकानेर ।
जोधाण सीकर तपत जबरी, महत जैहळमेर ।। 26 ।।

मारगा चलणी वोत माडी, पडै खतरै प्राण ।
विकराळ लू दिन रात वाजै, धिरा राजस्थान ।। 27 ।।

प्रताप लूवा धरा पीछम, पथिक भुलसै पूर ।
जातरा करणी भूल जावै, जेठ मास जरूर ।। 28 ।।

जानरी रसतो छोड जावै, छिपै दरखत छाव ।
रजथान लूवा लगी रमवा घलै मिनखा घाव ।। 29 ।।

मरुधरा हन्दा कठण मिनखा, तना वळतो ताय ।
बलिहार जाऊ मरवासी, रती ना घबराय ।। 30 ।।

दीखवै विछडा छडा दरखत धरा मरुधर धाक ।
सोहता पाणी सीर पसुवा, थळा ज्यावै थाक ।। 31 ।।

मन ग्राम रग्ना चनन मारग, पाळ मरवर पेख ।
हुल्लाम ठटौ अेम हुयगौ, दरा सूखी देख ।। 32 ।।

मिरगतिसणा दीखता मोदैं, समझ पाणी साथ ।
भरजाय महिनैं जेठ माही, पसु मरुधरा पाथ ।। 33 ।।

जठ महिनैं दोरौ जीणौ, वरा मरुधर धाम ।
तरसाय पसु नर अधिक तपती, जळत लू अठजाम ।। 34 ।।

इण तरह महिनैं जेठ अदकौ, करत दीनौ काढ ।
किन्माण हेतु मास कहियै, आवियौ आसाढ ।। 35 ।।

सवार सिझया रात सारी, तपत ऊमस तोर ।
गरमास वढगौ अधिक गिगना, जळद चढगौ जोर ।। 36 ।।

बावहियौ चढग गिगन बोलै, हियौ डोलै हेत ।
परदेस प्रीतम घरा परणी, चऊ मास चेत ।। 37 ।।

डोलिगौ धीरज धणा डोकर, तपत छोकर तग ।
आसाढ ऊमम छोड ओळग, आय मिलवा अग ।। 38 ।।

आसाढ त्रिरखा हीण अबडी, खलक करवा खीण ।
खूटियौ मारौ सज करसा, जोग दोरौ जीण ।। 39 ।।

आजाय त्रिरखा वगत ऊपर, ओज करसा आण ।
गोत प्राढ भीखम ज गग्मा, दाखे लिछमण दान ।। 40 ।।

बिरखा - बारणा

जागडी साणोर

ऊमस तपती आसाढ अधिक इळ, घणा जीव घबराव ।
जळधर चढ्या व्योम जणजीवण, घटाघोर घहरावै ।। 1 ।।

पिव पिव बोल विरहणी पटै, चातक वाण चलाव ।
नेण झराय नवोढा नारी, ओळू प्रीतम आवै ।। 2 ।।

बिरखा आय लगी धर बरसण, सागर भरिया सारा ।
फेना चढत नदी जळ फेह, धाम वहावत धारा ।। 3 ।।

कोयल मून रखै उण कारण, पूछ होय न पावै ।
पावस रितु मनमोजी पूरा, मेंढक सोर मचावै ।। 4 ।।

हुई सावण महिनैं हरियाळी, चरै पसु हरा चारा ।
पडिया पी पसु पालर पाणी, धाम दहै घण धारा ।। 5 ।।

बीजळ घटा खिंव घण बेळा, काठळ भूरी काळी ।
कच जीया लहरावै कामण, भाळ मुखा छिब भाळी ।। 6 ।।

डर डर करता फिरै डेडरा, सीपी रो सरणाटौ ।
गुजरिया घर घर घणघूमं, कहियं आडग काठौ ।। 7 ।।

डोल धर सावण डोकरिया, बावहियो नभ बोलै ।
वसुधा पवन सूरियो वाजै, खिडकी वासव खोलै ।। 8 ।।

उडो गरज रयो उतरादो, समगी बिरखा साची ।
धावलिया पडती घण काळळ, महि पर अदगी माची ।। 9 ।।

चलत समीर साधली चुपकी, मेह छाट ली मोटी ।
पळ पळ करडाटा कर पळकै, चपला अडी चोटी ।। 10 ।।

मूसळाधार बरसती मेहाँ, पडै तेज परनाळा ।
ना मावै जळ आडा खाडा, खूब घालिया खाळा ।। 11 ।।

हुयगी धर अब घडी हेक मे, जळाकार सर जारा ।
टप टप झरै म्हेल अर टापर, कट न खाली कोरा ।। 12 ।।

विटप लुक घण आय विहगा, भैंस्या गाया भीजै ।
बकरी छाट पडत बोबावै, धरती करसी धीजै ।। 13 ।।

उडगण झूलै रेत ऊपरा, रग किरगाटी राच ।
मोल रहै घण माझ मवेगै, खालण माही खाचै ।। 14 ।।

तपत घणी त्रिदोखा तावै, आडग जीव अमूझै ।
सरग चलै घण वात सरीरा, सकै झावळा सूझै ।। 15 ।।

रगत चाप बढ जावै रोग्या, दम सिकायत दूणी ।
म्ळी चलत लोचना रागी, धीमी रिखिया धूणी ।। 16 ।।

गरज साथ हायळ धर घाल, केहर विंदियो काटा ।
मिणगारा रसहीन सूरमा, बिरहण जोव बाटा ।। 17 ।।

समीर सुरियो बाजे सरसर, छवी बादळा छावै ।
वेरी करत किलोळ बाखडा, रिखा तुरत बुलावै ।। 18 ।।

हरियाळी धरती पर हुयगी, बीडा घास बदावै ।
फसल निदाण माढता फेली, महि पर नाही मावै ।। 19 ।।

सोखा तणत प्रात वेला मे, दिन भर तेजी दीसै ।
अरध आवरो तावड ऊग्यो, परणी अब न पीसै ।। 20 ।।

हरी घास फसला हरियाळी, नीतर भरिया नाडा ।
चढत ग्ररक पसु ग्राय उछेर्या, लार गवाळा लाडा ।। 21 ।।

पाणी लेण चली पिणियारी, सज सोळा सिणगारा ।
प्रभा कटि मुख ग्रौर पयोधर, निरखै निजरा मारा ।। 22 ।।

बीहर हुई लेयनै वाती, खच भर चारै खारी ।
ग्रबळा नाव जचै ना इणरो, पुरसारथ तन प्यारी ।। 23 ।।

खुदही काम करत खेता म, जोडै प्रीतम जोरा ।
पहल साझ घर ग्राय पूगवै, घास राळियो गोरा ।। 24 ।।

खीचड करै तयार खाण हित, दोडत करै दुवारी ।
सारा न जीमाय मुवाणै, विण पछ खुद री वारी ।। 25 ।।

सेजा री सोभा तन सजनी, रति क्रीडा मे रूडी ।
भेट्या दूर थकान दिन भर री, चढगी खिलकै चूडी ।। 26 ।।

बरसण लागो मेह बारणै, माजन बरम सेजा ।
तरुणी तन ग्रर लेव तिरपत, लागी होडा बेजा ।। 27 ।।

मलयाचळ मुगतागिर महिधर, हिमवतो हेमाळो ।
ग्राडावळ विंध्या ग्ररबूदा, वहवै बिरखा वाळो ।। 28 ।।

परवता हरियाळ छाइ प्रभ, सोभा देवै साची ।
कुच जिम धरै हरापटु कामण, ग्ररध ढकै छिब ग्राछी ।। 29 ।।

गगा जमना वहै गोमती, माही सिन्धु न मावे ।
बिरमपुत्र तेजी धर वहती, लगती साथ लिज्याव ।। 30 ।।

चोडी पाट सुरमती चम्बळ, गटक छोडै गलो ।
लूणी मरुधर मे नी लाजे, खोटो उनाम सेलो ।। 31 ।।

बरसाळोज बरसतो वाला, मारा ग्राणद साथै ।
ग्रथी वन्त्रियाँ लिछमण वीरत, मेहो मिर रै माथै ।। 32 ।।

सावण - सुखम्मा

छप्पय

महो भारत महान, ग्रान वाना घरा ग्रप्पं ।
घरा ग्रागं जग ग्यान, थान र दवळ थप्पं ।।
छिन छिन रिखिया धाम, दोहता कविजरा दाखी ।
हा माखो इतिहास, वीरता वीरा वाकी ।।
समाज साहित्य सस्कृति, कळा प्राकृत गिरि कन्दरा ।
अेक सू अेक ग्राछा ग्रठै, विविध तिवार वसुन्धरा ।। 1 ।।

जोरा तपवै जेठ, डळा व्है जेम अगागी ।
लूवा तरणी नप्पट, खलक री पेडी खारी ।।
ग्राधी चलै ग्रामाढ, मरव चारा जळ सासा ।
धाया व्है किरसारण, ग्राख फाडं नभ ग्रासा ।।
खज खारा पारा फीका खलक, म्हा कठरा उनाळो कडरा ।
ग्राविया ग्राम पूररा ग्रबै, लोक हियौ सावरा लडरा ।। 2 ।।

ऐजड जवरा खाख, नीम ग्राठी निवोळी ।
सुगन होविया माच, महो ना बिरखा मोळी ।।
मचसी वाजर मोठ, जोर गवार जवारा ।
तिमिया कावड तेज, भरा मू गडिया भारा ।।
जेठ मास तप रोयरा जबर, वाय घरणी मिरगा वजै ।
ऊगतौ रवी ग्रर ग्रातनो, सुगन नभा रातड सज ।। 3 ।।

पल भपेट पूर, ताळ भरसी ताळावा ।
नाळा नदिया नेह, ऊमड जळ चलै डळावा ।।

मावण थायी मीर, मही पर जळ ना माव।
वातै आया वाय, गीत किरसाण घुरावै ।।
धर जोन ग्हया वळद्या धवळ खाता वहता मेतडा।
चावता रहै धणियाप चित, रहै न अटक्या रेतडा ।। 4 ।।

जुगत जवाटी जोत, पकडवै हात पिराणी।
नसल बैल नागोर, भलीविध देवत वाणी ।।
कोड करै किरसाण, फू फाडा नारया फावै।
भली सुणी भगवान, तोर आई अब तावै ।।
घट साज समळ घर सू चलै, भातो नेयन भारिया।
कलेवो कत दही राव कर, नीरण नाखै नारिया ।। 5 ।।

दिन चढिया दोपार, हळियो छोड हताळू।
नीरण वळद्या नाख, अन सू प्रिथमी पाळू ।।
दही घी अर दूध, दपट करलै दोपारी।
आडो घडीय अेक, हुय थाकेल उतारी ।।
जोतण खेत झुट जाय झट, आळस तना न आणवै।
घुरावै जोत गुदळक गहण, छोकी विरती छाणवै ।। 6 ।।

करै साझ किरसाण, तुरत ब्याळू तय्यारी।
खीच दूध घी खूब, पुरुस अरधागिण प्यारी ।।
तेल फिटकडी त्यार, नाळ बैल्या न नामी।
कर महनत कडपाण, खोडा न राखण खामी ।।
जोतिया खेत मारी जमी, प्रीत भली पुरसारथी।
सावणू साख होसी सिरै, (थारी) वाटा जोवै भारती ।। 7 ।।

भट तडकै उठजाय, काम करवा किरसाणी।
पीस बाजरी पूर, घाल चूल्लो चताणी ।।
गाया भैंस्या गोर, दोर पुरत्या दोपारी।
भातै रोट वणाय, ध्यान टाबरिया धारी ।।

सिर खारी गोदचा मिसु समळ, लार रसी टोगड लिया।
निदाण फरती थाकै नहीं, कहो ? नाव ग्रवला किया ।। 8 ।।

करनै खेता राम, पूग घर ठोडा पोरा।
जळ लेवण नै जाय, जचै पिणियारी जोरा ।।
सटकै खीच सिजाय, कोरियँ बटो कीनो।
धिनधिन थारी धाम, भाव महनत रो भीनो ।।
सवनै सुवाण मोवै सजक, महिमा नारी माग न।
ताहरी अपर कीरत तरफ, है गुम्मेज हिंदवाण नैं ।। 9 ।।

वज सूरियो वाय, ग्राय बिरखा उतरादी।
वीजळ री झळळाट, भुवन नाड्या भरवादी ।।
गजब मादळा गाज, वेई जीवारू कापै ।
नर रोई में न्हास, झटोझट ग्रोटो झापै ।।
चारा धावड समिया चरण, भरण पेट मग भावियो।
फजल कर राम ग्राछी फसल, ग्राछो मावण ग्रावियो ।। 10 ।।

कैकी करै किलोळ, डेडरा बोलत डोलै।
बाबइयो उड व्योम, वाण पिव पिव री बोलै ।।
रचिया मचिया रूख, कीरती भ्राक्ड केरी।
मोभा सुरग समाण, घणा मन मरुधर घेरी ।।
पीळं बादळ गुदळव प्रभा, मावण ग्राणद सोहणा।
चराचर जीव सुख मे चरम, मानीजं चित मोहणा ।। 11 ।।

चन्द्रवदनि चितचाव, गति जिम मस्त गयंदी।
हालत ढुटं हुल्लाम, सुन्दरी खिडै सुगन्धी ।।
कटि भूखे केहरी, सजै जिम झप सिकारा।
दीपै वीजळ दत, उभै मतदळ अखियारा ।।
गमग गमि दिस पयोधर गिरी, रूप च्याल वेसा रमण।
मावणी तीज ग्रायो सजण, कोड हिय ग्राणद वमण ।। 12 ।।

सावण सिव रा सोम, सदन सुन्दरिया साजैं।
भाव भगती विभोर, छिनी सोमा वन छाजैं।।
अवर करैं उपवास, चन्द्रमोली जळ चाढैं।
चदण टीका चाव, कामण सिवलिंगा काढै।।
वन सोम करत कग वै भ्रमण, काकड महिमा कामणी।
महिमा धिनधिन इण मरुधरा, सुखमा वढगी सावणी।। 13।।

महिमा सावण मेळ, रही श्रदगी रेतीला।
हुई सबै हरियाळ, टिकी छिवी ऊंचा टीला।।
पाबासर सी प्रीत, थळवट सरोवर थाया।
मुगता पाण मराळ, उडि तिम सारस आया।।
हालता भरै चौकडी हिरण, खुमवै लीला खावता।
वीकाण थळी सोभा वढी, श्रदगी सावण आवता।। 14।।

वधिया जबरा वाव, हुआ ढकलेत हिवोळा।
नहरा पाणी नाप, छोड पज चढिया छोळा।।
बाढा नदिया वेय, आसरा केई उजाडैं।
हाणी करदै हाय, वणी गत बाही बिगाडैं।।
आजाम गाव सहरी इळा, चटकै बाढ चपेट मे।
ग्रकजाय मिनख धन धाव धर, फटकै पाणी फेट मे।। 15।।

बूठती बरसात, भली धरती पर भाया।
अेक आई आधार, कर देवैं आही काया।।
मरुधर हदी माण, छिता इह कारण छाजैं।
कोड करैं किरसाण, गयण उतरादी गाजैं।।
चावती वगत आवो चलर, वळू रयो बरसातडी।
मरुधरा भरोसैं मेह रैं, अवर न वाळी आतडी।। 16।।

बरसाळो

गीत काछो

नपत रवी मकळ श्रासाढ तायो, श्रबै सावण मास श्रायो,
घर्गो घन छायो गिगन ।
भळ जगत भायो, छोळ छायो, कमायो किरसाण ।।
हळ परै हाथा, मदद साथा, गीत पाथा गावता ।
रत दिवस राता, बीज बाता, गिरी घाता माण ।। 1 ।।

लगन इक जळ झड़ी लागी, भुवन विपदा दुर भागी,
श्रनुरागी मना उछन्न ।
खुम नाम खागी, दळा दागी, वाघ जागी व्याव ।।
घन गिगन गाजै, सोर साज, नित मोर ठाजै नचत ।
रिख सत राजै, बप विराजै, मना भाजै माद ।। 2 ।।

होद सर लेवै हिलोळा, छवै नदिया फेन छोळा,
डरा मद डोळा डकत ।
टावरा टोळा, रमै गेळा, प्रभा पोळा पूर ।।
जग जुगत जाणै मोज माणै, दम्पती ठाणै दिपत ।
प्रीती प्रमाणै तत नाण, नव ऊफाणै नूर ।। 3 ।।

यावट्यो श्रावास बोलै, डडरा रट मन्द टोलै,
हियो छोलै, निरहणी ।
श्रळि फूल श्रोलै, झुरत भोलै, रमिव खोल रोव ।।
श्रोयना श्रीती, परख प्रीती, मौन नीती मोहणी ।
नुगाऊ चीती जोर जीती, परस भीती पोष ।। 4 ।।

वसुधा हरी घण घास जाजी, भजन जिम वधु हरी माझी ।
मन्द ताडी मरुधरा ।
जस केर झाडी, बोर वाजी, राग ताटो [illegible] ॥
नेजडा खामा, आय आमा, नीम धामा घर नम्र ।
नरवरी तामा, मिटी मामा, टीज वामा [illegible] ॥ 5 ॥

चरै बन पसु हरा चारा भवन मिह्या धाम भारा,
पय महारा पालरी ।
गुदळव गुहारा, मार मारा, पथ टारा गाव ॥
गोहरा गारा, मूत मारा, टोळ न्यारा टोगरा ।
दूहती दारा, धवळ आरा, उणियारा आय ॥ 6 ॥

नूर भादव माग लागा, वरर वग्ग जम धागा,
कामणी वागा पहू ।
जामणी जागा, राग रागा, थान नागा [illegible] ॥
दिल तडित दाग, मिहर माग, गळै सागै [illegible] ।
लख गगन लागै, प्रीत पागै, [illegible] ॥ 7 ॥

अथागो मिहर उगाळै, भगन [illegible]
दिला नाऊँ दरमणा ।
नग्मात बाळै, घूर घार, [illegible] ॥
सीहर समाळै, गाव गार, [illegible] ।
रम्याद राळै, मही मार [illegible] ॥ 8 ॥

हुय फमल हरियार [illegible]
उमगा आद्यी जग । ॥
सदपाळ माची, [illegible] ॥
मोटा मतीरा, [illegible]
मग्गर मति [illegible]

प्रभ फसल आसोज पूरी, दुखा म्है किरसाण दूरी,
तेज सूगी तावडो ।
झूझै जरूरी, नाज नूरी, आस पूरी ईस ॥
बरसात बीती, हत हरीती, रात सीती घर रहै ।
सिट्या सुरीती, काट झीती, लोग छोती लीस ॥ 10 ॥

वेळा - वरणाण

गीत ललित मुकुट

पावस रुत माची प्रबळ, आछी बात अपार ।
हाची व्ही हरियाळिया, नाची खुसिया नार ।।
नाचै खुस नार, हरख अपार, तीज तिंवार, पीव घरै ।
सोळा सिणगार, पटनव धार, घर घर नार, कोड करै ।।
दम्पत दीदार, सम्पत सार, सुख आधार, चित हर ।
विरहणी विचार, वारम वार, साझ सवार, अख भरै ।। 1 ।।

अख भरै दुख मे अवस, विरहण करै बिलाप ।
वर्णै भाप जळ भेट बपु, तन पर इसडो ताप ।।
तन पर घण ताप, सवद सराप, कै हिव काप, जीव दहू ।
दामण दिल दागै, सिहरा सागै, लपगळ लागै, केम सहू ।।
छाती घण छोल, डेडर डोल, पिव पिव बोलै, वावडयौ ।
फको किलाळ, नदिया छोळ, होद हिवोळ, लैरहियौ ।। 2 ।।

लैरहियो जण लाक मे, सावण आणद सोय ।
चार हरित पसुवा चरण, जीवण पालर जोय ।।
पालर जव जोवै, सुरभी सोवै, महिसा मोय सयधारा ।
टोगडिया टाडै, बटी हाडै, मोजा माडै, सिभारा ।।
खीचड घी खासौ, दूधा चासौ, वाघर वासौ, हरखावै ।
नीदा लै नामी, खेत न खामी, अतरजामी गुण गावै ।। 3 ।।

गावै करसौ गीतडा, पखरु सरवर पाळ ।
झडिया लागी जोर री, भादव मास विचाळ ।।

मेठा सकेत, हिव घणा हेत, चालै चेत, सुख माता ।
निरधना निकेत, गूदड़ बेत, दुख घण देत, अधराता ।। 8 ।।

अधराता सरदी अधिक, मास पौम रै माय ।
नीर जम गयो नाडिया, सरदी प्रात सवाय ।।
सरदीज सवाई, सुत वतळाई, उठ मत माई, ठग जाई ।
रवि दरस दिखाई, उठोस भाई, गूदड़ माई, फरमाई ।।
पुरमारथ प्यारा, बेटा म्हारा, सूरा सारा भारत रा ।
नीची मत नाखो, ऊंची ताखो, बोल न भाखो आरत रा ।। 9 ।।

आरत भारत ना अवै, (वहै) सकळ विस्व सनमान ।
भाखै भारत वातड़ी, धर वै सारा ध्यान ।।
धर वै सै ध्यान, कर वै कान, मुलक ममान, दरमावै ।
जाणवै जहान, हिन्द महान, गरिमा ग्यान, हरमावै ।।
भारत सत भाखै, मायत राखै, जगलज ढाकै सरसावै ।
जग रो हित झाकै, डोळ न डाकै, मयमव राखै, गुणगावै ।। 10 ।।

गुणगावै गुणवान रा, मरद हताया माय ।
काधै राखै काम्बळी, सरदी नाय सताय ।।
सरदी न सतावै, तर तर जावै, नेडौ आवै, रितुराजा ।
भ्रमरा मन भावै, कोयल गावै, फूल खिलावै सिरताजा ।।
छिब बेलड छाई, गळै लगाई, पौधा पाई, सौराई ।
पैक्षा पुरवाई, मसती लाई, विसधर ठाई, बौराई ।। 11 ।।

बौराई सजोग वम, कामण फागण काय ।
गावै नर घण गीतडा, वैठा चग वजाय ।।
वस चग वजावै, फागण गावै, जोवन छावै, लहरावै ।
घूघर घमकावै, नाच नचावै, माग वणावै, घेराव ।।
होळी मगळाई, मरद गमाई, चेत वदाई, गरमाई ।
पक्वान पुजाई, सीतळ माई, ठडा खाई, फरमाई ।। 12 ।।

भादवा त्रिचाळै, अहि विस आळै, वाम समाळै, पुरवाई।
खेता जळ खाळै, फसळा गाळै, नदिया चाळै, चट आई।।
वाढा जळ वहिया, घण दुख सहिया, घण जण गहिया राय घरै।
राजो ह्र रहिया, भो सुख भईया, प्रभा पईया धाम तरै।। 4।।

करै जोर फसला वई, नामी कियो निदाण।
मातू साख सुहावणी, कोट हियै किरसाण।।
काडै किरमाण, वछु न काण, खेता खाण, निपजेला।
आभा असमाण, धरती धाण, महिमा माण, जग देला।।
बायर सुभ वाजै, फसला छाजै, कीरत राज आसोजी।
पावस रत प्यारी, जग आधारी, महिमा धारी, मनमोजी।। 5।।

मनमोजी हुवणा मिनख, पावस रुत रै पाण।
आछी फसळा मे अवै, धाती रखी न काण।।
काती नह ताण, मोजा माण, दीवा दाण ओसाण।
पुरसारथ पाण, ह्रली हाण, धाया धाण किरसाण।।
नीआ घर लाटा, कीआ काटा, दीआ दाटा, मरखाऱ्या।
आणद पुळ आठा, टाटा वाटा, घरै न घाटा इदुकारचा।। 6।।

इदकारी नारी अधिक, दीप मालिका दख।
साफ सफाई सदन री, पूरण घर घर पेख।।
पूरण घर पख, दीपक देख, कळह न केक, नर नेक।
विसवास विसेख, नामी नेख, राखे टेक, हरि हेक।।
कातिय स्नान, धर हरि ध्यान, देवै दान, परभात।
परणानिदान, अरजी कान, अनुचर मान, ह्रसात।। 7।।

ह्रसातं जोवन हियों, पण सरदी परवस।
मिगसर पो सरदी मगन, देखो मरुधर देस।।
दी मरुधर देस, मरद विसेस, ढर ढर ढेस, हिव ढाई।
विगडै घण वेस, वद न वेस, सरदी नेस, सवळाई।।

मेठा सकेत, हिव घण हेत, चाले चेत, सुख माता।
निरधना निकेत, गूदड वेत, दुख घण देत, अधराता ॥ 8 ॥

अधराता सरदी अधिक, मास पोम रै माय।
नीर जम गयो नाडिया, सरदी प्रात सवाय ॥
सरदीज सवाई, सुत वतळाई, उठ मत माई, ठग जाई।
रिव दरस दिखाई, उठोस भाई, गूदड माई, फरमाई ॥
पुरसारथ प्यारा, वेटा म्हारा, सूरा सारा भारत रा।
नीची मत नाखो, ऊ चो ताको, वोल न भाखो आरत रा ॥ 9 ॥

आरत भारत ना अवै, (दहै) सरळ विस्व सनमान।
भाखे भारत वातडी, धर वै सारा ध्यान ॥
घर वै रसै ध्यान, कर वै मान, मुलक ममान, दरसावै।
जाणवै जहान, हिन्द महान, गरिमा ग्यान, हरसावै ॥
भारत सत भाखै, मायत राखै, जगलज ढाकै सरसावै।
जग रो हित झाकै, डोळ न डाक, मथसब गाखै, गुणगावै ॥ 10 ॥

गुणगावै गुणवान रा, मरद हताया माय।
काधै राखै काम्बळी, सरदी नाय सताय ॥
सरदी न सतावै, तर तर जावै, नेडी आवै, रितुराजा।
भ्रमरा मन भावै, कोयल गावै, फूल खिलावै सिरताजा ॥
छिब वेलड छाई, गळै लगाई, पोधा पाई, बौराई।
पैडा पुरवाई, मसती लाई, विसधर ठाई, बौराई ॥ 11 ॥

बौराई सजोग वस, कामण फागण काय।
गावै नर घण गीतडा, वैठा चग वजाय ॥
वस चग वजावै, फागण गावै, जोवन छावै, लहरावै।
घूघर घमकावै, नाच नचावै, माग वणावै, घेरावै ॥
होळी मगळाई, मरद गमाई, चेत वदाई, गरमाई।
पसवाम पुजाई, सीतळ माई, ठडा खाई, फरमाई ॥ 12 ॥

फरमाई कविजरण फजल, दम्पत सुगना दोर ।
पीव छोड परदेस ने, घर करणी गिणगोर ।।
घर री गिणगोर, हरख हिलोर, जोबन जोर, कामणिया ।
सिंझ्यारा सोर, भा घरण भोर, देहा दोर, दामणिया ।।
वेसाख विताई, गरमी छाई, तावड छाई, लोका नै ।
नाड्या जळ नाही, भूखा भाई, पसु डेडाई, डोका न ।। 13 ।।

डोका ने पसु घरण डुळै, मास जेठ रै माय ।
भई खाली भखारिया, नीरण बाडै नाय ।।
नीरण अब नाही, करो कमाई, जेठी खाई, दुखदाई ।
सेठा घर जाही, मान गमाई, दाणा ताई, करसाई ।।
भारत मे भाया, घणा कमाया, सेठ बरणाया सकेता ।
बाकी सब भूखा, रूखा सूखा, चेता चूका रकेना ।। 14 ।।

रक किता अजहू रुळै, सोसरण करवै सेठ ।
नेकी मरजादा नरा, पापी तोडै पेट ।।
पापी घरण पेट, लहै लपेट, काळ चपेट कुरळावै ।
ार भूखी घेट, चितव चेट, भू डी भेट, घटकावै ।।
आसाढा ओदी, खाली होदी, नीरण बोदी, घर नाही ।
सिंझ्या मिसकारा, निस निसकारा, चित चुसकारा, सरमाई ।। 15 ।।

सूरा - सतक

दूहा

भुक जाणो डर जीवणो, अर सहणा अन्याय ।
सूरा अेता ना सहै, जे माथौ कट जाय ।। 1 ।।

अड ज्यावै सच ऊपरा, जिका न गूंथै जाळ ।
वचन निभावै वेवता, सूरा भाव ममाळ ।। 2 ।।

दुबळा पर राखे दया, दहे न सबळा दाव ।
सरणागत रिच्छा समण, सूरा तणो सभाव ।। 3 ।।

रिपुवा रै सामी रहै, रै भामी पग रोप ।
वीर देस रै वासतै, त्यार खाण नै तोप ।। 4 ।।

उर मे भय ना आणवै, करता दुरलभ काज ।
वसुधा पर विख्यात है, सूरा तणो समाज ।। 5 ।।

धरम अरु जाती धरा, तिरिया इज्जत ताण ।
रिच्छा सूरा राखवै, जीवत दहे न जाण ।। 6 ।।

आदर सूं जीवै अवस, मुलक रखावै मान ।
सूरा जीवत ना सहै, अपणै रो अपमान ।। 7 ।।

विरदाया घण विरदवै, दे वित सारू दान ।
करै जगत चौकूट मे, सूरा रो सनमान ।। 8 ।।

रिपु सारा डरता रहै, आगै हेक न आय ।
सूरा देख समीप मे, कापण लागै काय ।। 9 ।।

रिच्छक सुरा देस रा, और देस आधार।
दोरा दिवमा देम रो, वीरा कांधे भार ॥ 10 ॥

थारो दुसमी मू थका, कम ना हुवै क्नेस।
जीवत जमी न जाए दू, सूरा मो सदेस ॥ 11 ॥

झालर वगता जलमियो, वीर चमकतै भाळ।
मिर मोटो छोटा चरण, लोयण डोरा लाल ॥ 12 ॥

उर चोडो आई उभर, हाथा लम्बा हात।
जोरा नखतर जलमियो, वीर रखावण बात ॥ 13 ॥

नान्यो पाल्या नीमड्यौ, त्राणी उचरत राह।
आज धरा पर आयगो, दुसमण करवा दाह ॥ 14 ॥

दिल पर गोळी दागदी, दुसमी मोको देख।
मरतो मरतो मारगो, इसडो वीर अनेक ॥ 15 ॥

नान्यो रहयो निहारतो नाळो काटत नाण।
हाथ वळयो कटार हित, जग सयोगी जाण ॥ 16 ॥

सूती जच्चा साळ म, कनै टकी करवाळ।
वाळक मसतर लेवबा, उठ उठ करै उताळ ॥ 17 ॥

जोसी टीपण जोवता, धूजण लागो वीर।
वैरया खन वहावसी, वणसी इसडो वीर ॥ 18 ॥

बरस पच्चीसं वीच मे, मतस्वा सताप।
देसी माथो देस ने, अमर हुवेला आप ॥ 19 ॥

वाळक लागो वोलवा, माद जिया सादूळ।
चुववा लागी चित्त मे, सतम्वा रै सूळ ॥ 20 ॥

सामी समबा सत्रु वा, वरवै ताकत कूत ।
कर धारी वरवाळ न, पनरै बरसा पूत ॥ 21 ॥

गाजर सम रिपुवा गिणत, करतो दुसमण काण ।
हाजर लडतो देस हित, पिता निसारै प्राण ॥ 22 ॥

भाग अणाया जार रा, गाडा दिया टिकाय ।
दुसमण वाळै सग दळ, हाची मचगी हाय ॥ 23 ॥

भाक भीव मचगी जबर खागी रखै न खेर ।
दुसमण कायर दोडता, उडिया मूड अवेर ॥ 24 ॥

सुरगा तात सिधाविया, रिच्छा दस करत ।
वीर मात खण वासतै, जोहर माय जळत ॥ 25 ॥

कुळ मे नाव कमावबा, तर तर हुवो तय्यार ।
मात वरम री सूरमो, काध लीधौ भार ॥ 26 ॥

ससतर घरा समाळिया, अणिया तज उपाय ।
असव तणी असवारिया, कमधज रया कराय ॥ 27 ।

मान दियो दत्त मगणा, बारा करज चुकाय ।
बदळो चुकाण वापरी, कमधज काप कराय ॥ 28 ॥

बरस बारवे बरिया, सूर दिया समचार ।
आऊ फरज उतारवा, ते दिन रह्यो तयार ॥ 29 ॥

चवदै वरसा चालियो, बिकसी काय विसेस ।
चढियो घोडै चातरक, दुसमी मेटण देस ॥ 30 ॥

जाय मचाई जग म, जोरा भाका भीव ।
बदळो लेवण बाप रो, सूरो हुवो सरीक ॥ 31 ॥

धर धूज दिस दहलवै, दुसमी वाप देख।
सिर काटण नाखै झपट, अदगो सूरो अेक ॥ 32 ॥

अरि सिर काट आगता, सेना मचियो मार।
दिपवै सूर दोपार मे, जेठ रवी सम जोर ॥ 33 ॥

वेरी भागण लागिया, देख सूर दीदार।
अन्त जेम उग आविया, उठ जावै अंधकार ॥ 34 ॥

चव रगत अरिया चलत, तडित जेम तलवार।
काळी कवाळी ररै, सूरा रो सतकार ॥ 35 ॥

खेला टावर खेलता, वणावै नायक वीर।
भला देय सेना सजै, समर जितावण सीर ॥ 36 ॥

रमता धुवळिया रम, सना रखै समाळ।
दुसमण हुदा देखनै, मच भागै भुरजाळ ॥ 37 ॥

ऊंच आसण ऊपरा, जमव सूरो जाय।
बाकी टावर बैसिया, आसण नीचै आय ॥ 38 ॥

भूगी धरती मुलक री, सबसू बटक्र दस।
नरखा देऊ ना वदै, पग मतर परवस ॥ 39 ॥

भाव दरसिया भीतरी, सूर वीरता साथ।
मान रखासी मुलक रो, आ बालक अवदात ॥ 40 ॥

समझ वाळक सतरुवा, ऊभा निरभय आय।
धूम मचाई रिपु धरा, सूरो अेकण जाय ॥ 41 ॥

अया रा सिर काटिया, घातया वेया घाव।
जीत आवियो जग सू, चित्त मे सूर चाव ॥ 42 ॥

अजस कुळ नै आवियो, हरख देस मे होय।
आवरण लागा आघ सू, सगपरण करवा सोय ॥ 43 ॥

विरती भाव विरागरणा, लखै सासरै लाग।
सुलखरणा तरणी सुन्दरी, सजियौ सूर सजोग ॥ 44 ॥

परणती वधु परखियो, हतळेवा रा हात।
आदरण खग रा ओळखै, गरिमा भूरै गात ॥ 45 ॥

कत रवी सस कामरणी, गौरव भरियौ गात।
अरक सुधाकर मा न अब, मिलरण हुवौ घर माथ ॥ 46 ॥

करियौ हरख हुलास कर, कामरण मिलता कत।
घर चुडला अर धरम रै, दुसमी लगै न दत ॥ 47 ॥

हू जलम्यौ हू देस हित, निवळा राखरण नह।
धरम नार री पख घर, दुसमी मारण देह ॥ 48 ॥

मरजारू कै मारल्यू, ठावा कीरत ठाण।
वैर्‌या खून वहाय हू, तिल तिल भूमी ताण ॥ 49 ॥

माया री मोह न मन, काया री नह काट।
धरम सिरै रिच्छा धरा, छिपु ना हू रणछोट ॥ 50 ॥

वाजा रणभेरी वजह, सतरू आयो सीव।
हुकम, दिरावौ देस हित, समर पधारै पीव ॥ 51 ॥

पटु पिव रण रा परिया, मसतर लिया सभाळ।
अमर उतारण आरती, वधु आई सज थाळ ॥ 52 ॥

कू कू मिलै न काड सू, तिलक वमी लख ताह।
अपणी काटी आगळी, भरी रगत सू वाह ॥ 53 ॥

तेण रगत रौ तिलकडौ, सोभा भाळज सीस।
वीरा दहै विरागणा, ग्रमर नेह ग्रामीम ॥ 54 ॥

ग्रमव दुडाया ग्रागता, पवन गती सा पाय।
दुसमी मारण देस रा, ऊभा सेना ग्राय ॥ 55 ॥

काळ काळ मिल कूकिया, दुसमी गळै न दाळ।
टाळ टाळ मिर दूटवै कर सूरै कर वाळ ॥ 56 ॥

जीत ग्रायिया जग सू, ग्रबै मिलैला अग।
वीर कहै विरागणा, नी तो सुरगा सग ॥ 57 ॥

दहा रग ग्रर देवसा, जीत ग्राविया जग।
नेवा मे मिलसा ग्रवस, नी तौ सुरगा सग ॥ 58 ॥

लाखा माही लख लही, ग्रग्यिा सूर ग्राभ।
कुण इसडी भरवाळ रा, जगा देय जवाव ॥ 59 ॥

जिण दिन सूरा जावसी, वाढा खून वहाय।
फिरै लार धाळी फजळ, मोज लेण मन माय ॥ 60 ॥

रगत भरत खपरा रया, रुद्र देव राजेह।
धाळी धपाळी घणी, गळ उतरत गाजेह ॥ 61 ॥

मिरडा ग्ररोगै रगत मन, मिरड पाय मुडमाळ।
सूरौ ग्रागै सचरै, तर मिर खूना ताळ ॥ 62 ॥

हुय भटक चद्र हाम रो, मिर दस दस लै साथ।
हसै काळी हुलाम हू, महादव मुभकात ॥ 63 ॥

जेठ रवी जिम जग मे, तपियो सूरी तेज।
ग्ररिदळ इसडी ग्रगन मे, जळना लगै न जेज ॥ 64 ॥

समर धरा सागर समी, जोधा मजळ समान ।
पोयण जिम थाई प्रभा, अदगी सूरै आन ॥ 65 ॥

ओपै समर आकास म, चकम रया चितवान ।
तारा जिम जोधा तवू सूरो चद समान ॥ 66 ॥

वरमाळा जिम वरसव, धर सूरै करवाळ ।
वाळू जिम अरि सिर बहै, कटण माय फकाळ ॥ 67 ॥

आवत जावत आगती, केया रा सिर काट ।
पटक रही खग धर परा, पलक पलक परळाट ॥ 68 ॥

कूद परी चढगी कमध, करी माथ केकाण ।
मेघाडम्बर डगमगै, छिना रयौ रिपु छाण ॥ 69 ॥

मचगी दुसमी सेन मझ, हाची हाहाकार ।
दरसी पीठा दोडता, लिया सूर ललकार ॥ 70 ॥

न्यारू तरफ रिपुवा चमू, तिण में सूरै ताण ।
बाय रया इसड़ै बगत, कर दोनू किरपाण ॥ 71 ॥

मार मार सिर मेलिया, अरिया रा अणपार ।
सहै हकलो सूरमो, चार तरफ रा वार ॥ 72 ॥

भाला दूर भगाविया, तलवारा दी तोड ।
जमदाढा पडगी जमी, छिपै रिपु रण छोड ॥ 73 ॥

मरगा दुसमी मोकळा, पकडै वचिया पाथ ।
झंडी हाथा जीत री, सूर फिरै लै साथ ॥ 74 ॥

आया घर इदवार सू, सजनी थाळ सजाय ।
आखो भारत अजसै, घर घर सूर वधाय ॥ 75 ॥

अणिया नलवारा अडी, अडिया भालै घाव ।
जमदाढा रा झेलिया, आ सरीर परभाव ।। 76 ।।

रोमरोम मे भर रया, गात अनेक घाव ।
सहन किया पोयण समझ, दुसमी माला दाव ।। 77 ।।

म्हे ता झेल्या मोकळा, दुसमी रहिया देख ।
जिरै पडी म्हारी जबर, उठै न पाछो अेक ।। 78 ।।

दोय जीतिया देस रा, प्रबळ सूर जुध पार ।
रण छिडिया राजी हुवो, तीजा मे तय्यार ।। 79 ।।

हुव मरदा मरणो हुवै, बरस पचीसै बीच ।
देखा दरखत रगत सू, समर विचाळै सीच ।। 80 ।।

दुसमी री सैनिक दळ, खूब आवियो धीज ।
सूरा कम हू तो थका, रटक कटक लै रीज ।। 81 ।।

सूरा री सना समर, असव गिरद आकास ।
अधियारो छायो इळा, पखै न रवि परकास ।। 82 ।।

टप टप घोडा टाप सू, सहलै धर फण सेस । ।
मारण रिपु मेदी मणा, पखियै कोप प्रवेस ।। 83 ।।

मार मार रण मेलिया, माथा खूनी मास ।
नदी खून पूगी निकट रिपुवा घरा निवास ।। 84 ।।

सूर अगै लारै सिवा तिण लारै त्रिनेण ।
उटीक करावै अपछरा, सुग्गा साथ बरेण ।। 85 ।।

सिर कटियो सूरा तणो, नभ दिस खूनी धार ।
मानो सिव सिर आपसू, बूढी गगा धार ।। 86 ।।

धड़ झूझ धूजै धरा, मुख हसवै धर माथ।
कवन्ध जुध सूरी करै, रिपु छाई चख गात ॥ 87 ॥

कवन्ध जुध सूरी करै, भुज दोनू खग भाय।
दरसण करता देवता, व्योम सुमन वरसाय ॥ 88 ॥

कवन्ध जुध कीरत कथै, सूरा साथ सवाय।
जग विचाळै झूझनो, चारण जोस चढाय ॥ 89 ॥

मरण निवार मनावियो, खत्राणी स्सैं साथ।
जौहर माही जायन, होम हुई मिल हाथ ॥ 90 ॥

आ जुध गत ही पहल री, आज गती की ओर।
जमदाढा भाला जगा, दिपै राइफल दोर ॥ 91 ॥

सजै मोरचा सूरमा, रेफल हाथा रेय।
अरिया मीनै ऊपरा, दट दट गोळी देय ॥ 92 ॥

लोड करै पल पल लखा, सूरी रेफल साथ।
रिपु मोरचै राखिया, हिलना सकिया हाथ ॥ 93 ॥

धुवो उठ थळवट धरा, रै दिन रा व्ही रण।
कारतूस किलकार सू, गूज मचाई गेण ॥ 94 ॥

सूरी पटण टक सथ, धावा बोलण धाय।
धमकै सू अरि धूजता, मरै मोरचा माय ॥ 95 ॥

उडतो देख आकास म, दुसमी जवायु यान।
सूरो गोळो साजियो, पड़ै जाज धर आन ॥ 96 ॥

सूरो गोळा साजनै, धरा मचाई धाक।
मौसम ठंडै मायनै, गरम हुवो गेणाक ॥ 97 ॥

गोळा सूगी गेरिया, बैठ त्रिमाणा माय ।
गरमाला जिम बरसवै, परजै दुसमी पाय ।। 98 ।।

चोट भगे रिपु निज छिना, लडिया झूठा लाड ।
सूर रिपुवा सरहद मे, झंडो दीनो गाड ।। 99 ।।

रिच्छक गाथा देस रा, सूरा दी सतकार ।
रचियो लिछमण कीरती, आखी बुध अनुसार ।। 100 ।।

वीर - वखाण

गीत प्रस्थ मनमोद

धरमवीर सतवीर धिन, सूरवीर घण सान ।
दानवीर महिमा दुनी, वीर करम वाखान ।।

वाखान करम वीर रा सुकवी वर्णं, दानवीर री जग कीत दाखै ।
सूरवीर नै जाणवै ससार स्सै, भलो सतवीर न लोक भाखै ।।
धरमवीर री महिमा प्रणूती धरा, रजा ना पाप री करदै राखै ।
ग्राछा कवीजै ठोड मव श्रापरी, ढाल होय जगत री लाज ढाकै ।।1।।

धरम दसरथ निभाय धर, पाछै तजिया प्राण ।
धारै राम नीति धरम, पग पग वना पयाण ।।

पयाण वना पग पग कीधा धरापत,
वरस चवदै वन माय बीता ।
पितु श्रग्या रख भीमम ध्रुम पाळियो,
मरीग प्रजाळियो श्रगन सीता ।।
हाड निज काटवै दधीची धरम हित,
घणी ध्रम दाखियो किसन गीता ।
न्याय हित माम निज काटियो सिवि नृप,
जुधिस्ठर नृप सत समर जीता ।।2।।

करण दानव्रत धारण, रै पुळकत जग रोम ।
पोहर तिणरै नाम पर, वाजण लागी भोम ।।

भोम लगी वाजणै पोहर करण भळ,
श्रचळ चोळ श्रोढै दान अगा ।

पावै नृप भोम विक्रमारिव दानपथ,
मतरै हरिचन्द हुवा सगो ॥
करमवीर किसन अरजुन री कीरती,
राजवी लाव मे घणा रगा ।
अभिमन्यु भीमज सूरवीर ओपिया,
दिखायो पराक्रम अरि दगा ॥3॥

जीवत जावै ना जमी, रै थावै कुळ रीत ।
मर जाव पावै मुगत, पूरी अर सू प्रीत ॥

प्रीत धर सू पूरी जग वीरा पर्यं,
लर्जै रिपु ऊपगा थाप लता ।
मू छा मरोडवै रोटवै अरि मग
छवी सू अरि दळ पाय छेता ॥
जीव सू मोह ना ज्यारौ जग जाणवै,
देखा कदै न उन जीव देता ।
मरण जा निरखळा दुरवळा साजवै,
भाजवें खळा रा कठ बेता ॥4॥

गिरी कन्दरा घूमिया, सहिया घण सताप ।
अमर हुवा अर ऊपरै, पौरग राण प्रताप ।

प्रताप राण पारस वीर गम्भीर प्रभ,
मुगला रा चाव घण दाव मटै ।
हिन्दवाण रिव लाज राखी हिन्द री,
वडाळ आसण स्वाधीन बैठ ॥
जगवीर नाम ए थारो भू भव,
नाम अर काम छिव खळा नट ।
तमवीर तुव दख धारलै तेज तप,
हुवै नर वीरता ढाह हट ॥5॥

दळ मुगला रौ देखनैं, तिण पर पडता तूट ।
छापामार पद्धति ऊगी, रचै सिवाजी रूठ ।।

रूठ सिवाजी रच रण मुगल राज सू,
भय हियै ओरंगजेब भारी ।
दखियौ हार मुख घण वार मुगल दळ,
कळा रण हुता ना लगी कारी ।।
मराठा राजवैं छाजवैं हिन्दमभ,
धीरता वीरता छत्रधारी ।
सिवराज सिरताज सजग स्वाधीनता,
साजनी हिन्द में प्रभा सारी ।।6।।

अमर सिंघ राठौड़ इळ, समरवीर सिरमाड ।
नृप भागी नागाण रौ, रिपु दळ दीना रोड ।।

रोड दीना रिपु दळ अमरैं राजवी,
बहादुर छाजवैं रणा भीनौ ।
किलै ऊपरा तू अस्व हू त कूदियौ,
दाव ना वदै रिपु लागण दीनौ ।।
कटारी भाड दी धम्व मे वीरकर,
किलमा ऊपर वार कीनौ ।
जग गाव गीता धीरती जेणरी,
लोक मे सुजस रस वीर लीनौ ।।7।।

मुगल हुक्म ना मानियौ, जस जोधाण जास ।
समवज सुतन आसकरण, दिपियौ दुरगादास ।।

दुरगादास दिपियो भड राठौड दळ,
जिमे स्वाधीनता प्रीत जागी ।
वीरता जावती थामली तूझ पर,
खत धजळ आपियौ वीर खागी ।।

नाक राखी तु ही नौकूटी नाथ री,
त्यागियौ राज रौ नेह त्यागी।
वीरा सिरोमणी निम्ळा वाहर,
लगन मत धरम री परम लागी ॥8॥

नरा पारम नमानियाँ, हुई धरा पर हृष्न।
नारी अगवाँ नीसरै, पुन दिखावण पथ्य॥

पथ दिखावण पुन ध्यान धारै प्रथम,
लिछमी वाई खग हाथ लीधी।
गाजव राणी खळा गजण गरव,
दळ भजण फिरंगा दम दीधी॥
विरागणा रूप स्वाधीनता वाहर,
पराधीनता नह घूट पीधी।
वारिया प्राण धिन वतन र वासत,
काज रण सामतँ अमर कीधी ॥9॥

चन्दर सखर चेतणा, मजग हुवौ स्वाधीन।
मगन फिरंग विरोध मे, धारज मारा कौन॥

कौन सारा धारज जारज फिरंग कळ,
चेतणा वरै परताप चाळी।
लोरड फिरंग पर निसाणौ लेयन,
गरिया चादनी चाक गोळी।
हामियौ सरवस्व केमरी देस हित,
मात सुत दख ना हुवौ मोळौ।
इता वीर अमर रहसी इतियास मे,
लेयने नाम गा सीस लोळौ ॥10॥

प्रताप - प्रभा

गीत चित इलोल्

मुतन उदय हिन्दवाण सूरज, हिंदवा हिय हार ।
विख्यात हुवै प्रताप वसुधा, धरम खत्री धार ।।
तौ बलिहार जी बलिहार, हेतू हिन्द गौ बलिहार ।। 1 ।।

आधीन राजा मयै अपवर, बन्द हुयगा बोल ।
स्वाधीनता परताप सेवी, खिवै हिरदौ खोल ।।
तौ अणमोल जी अणमोल, अधिपा मायनै अणमोल ।। 2 ।।

विजय भय सू नृपत रीभत, खीज पड़गी खाड ।
हा हा मिलै अकबर हताई, जोधवा घण जाड ।।
तौ दी गाड जी दी गाड, गरिमा हिन्द री दी गाड ।। 3 ।।

ममती लहै मब बैठ महला, गरब करत गुलाम ।
भरमायगा अकबर भरोसै, कर दिया बेकाम ।।
तौ अठजाम जी अठजाम, आळस छावियौ अठजाम ।। 4 ।।

सजधजी सेना लगी भम्भण, अकबरी आदेस ।
कर कूच दळ मेवाड वानी, प्रबळ वेग प्रवेस ।।
तौ फण सेसजी फण सेस, महलण लागवी फणसेस ।। 5 ।।

भिड गयौ राण प्रताप भालौ, अहर छायौ अध ।
मच गई खळबळ सेन मुगला, मान सेना मन्द ।।
तौ पावन्द जी पावन्द, पूरी हार रै पावन्द ।। 6 ।।

केकाण चेतक तणी कीरत, जग माथी जोर ।
रिच्छा धणी प्रताप राखी, इसौ अस्व न ओर ।।
तौ तपतोर जी तप तोर, तारिफ तुरगा तप तोर ।। 7 ।।

भमिया गिरी प्रताप भागी, रूप वागी रग।
स्वाधीनता हित कस्ट महिया, देख दुसमण दग ॥
तो तळ तग जी तळ तग, तुरका कीधिया तळ तग ॥ 8 ॥

सोना जिवरण सेजा सुमन री, सुवै धरती सेज।
घास री रोटी खाय गिरी मे, तोड़ वढियो तेज ॥
तो गुम्मेज जी गुम्मेज, गौरव देस री गुम्मेज ॥ 9 ॥

रहसी ग्रमर प्रताप राणा, सूरवा सिर मोड।
स्वाधीनता परतीक साचौ, चाव गढ चित्तोड ॥
तौ वेजोड जी वेजोड, वीरा छाप दी वेजोड ॥ 10 ॥

कायर - काट।

दूहा

जीवै छानै जगत मे, गरळा पीवै घूट ।
पराधीनता पाविया, कायर खावै कूट ।। 1 ।।

हसै लोग हताइया, जद कद कायर जोय ।
कायर विरती कारणै, करै पूछ ना कोग ।। 2 ।।

जणणी दूध लजायदै, लाजै चुडल लाज ।
कलक लगै कुटम्ब रै, कायर जीवा काज ।। 3 ।।

झुक जावै जावै जमी, अर सहव अन्याय ।
कायरता रै कारणै, घरणी लाज गमाय ।। 4 ।।

बात न साची बोलवै, झट डर होवै झेर ।
भीरू कायर भावना, फिरती रहवै फेर ।। 5 ।।

डोळा मिनकी सू डरै, अडै अधार ओर ।
भडगा ऊटा भवन मे, कायर विरती कोर ।। 6 ।।

सुणियो तलवारा सबद, रयो काळजो काप ।
वेगो धू वै बारणै, ऊडो भडिया आप ।। 7 ।।

मारो खोसो मोकळा, जोर ओर जमीन ।
कायर विरती कारणै, देखो भू डा दीन ।। 8 ।।

विरदै ना विरदाइया, हलकारया ना होय ।
भीरू कायर भावना, कारी लगै न कोय ।। 9 ।।

जाणै वत्ती जीवणी, मरणो जाणै मेख।
झगडा मे कायर जिका, दृग न्हासै देख ॥ 10 ॥

हाको सुणिया हापवै, धडको सुणिया धाय।
नाव लजावै नाह री, कायर जीव कहाय ॥ 11 ॥

समर छोड भडिया मदन, जीवण कायर जीव।
मूडो दरमावो मती, परणी कहवै पीव ॥ 12 ॥

भीरू वणिया वालमा, कुळ मे थाई काण।
कता थारै कारणै, लाजै परणी लाण ॥ 13 ॥

कटक छोड आया किया, वालम जीव बचार।
मरणा सू डरणा मिनख, भूमि वणिया भार ॥ 14 ॥

वाता मे खाता वळै, गाथा झूठी गाय।
भीड पडै झट भागवै, कायर मीत कहाय ॥ 15 ॥

पूगा घर झटकै परा, रै डरता जुध गाड।
कायर कता हित किया, कामण वन्द किंवाड ॥ 16 ॥

बालम भाखै वारणै, कामण खोल किंवाड।
श्रो मुख देखू ना अब, तरुणी दीनो ताड ॥ 17 ॥

वालम जीव बचाय न, अै दोडया घर आय।
कापुरसा री कामणी, खपै कटोरी खाय ॥ 18 ॥

मामोसा किम भूलगा, इसडा घर री ओळ।
कापुरसा रै कुज मे, मन मतिया रै मोळ ॥ 19 ॥

सासू जायो स्याळको, मडण घुसाळी बीच।
सतिया हन्दा सिन्धु मे, वग्यो वादो बीच ॥ 20 ॥

जिणघर कायर जलमियो, दिन खोटा उण द्वार ।
जमी धरम अर जोरू वा, अमूभँज इक्सार ।। 21 ।।

मोटो करियो मावडो, पाळ पोस परिवार ।
कायर आज कुटुम्ब रै, कोजी काटी कार ।। 22 ।।

धिक धिक सबै धिक्कारवै, राजा हो या रंक ।
कायर मिनखा कारणै, कुळ में लगै कळंक ।। 23 ।।

उत्पादन घटय अधिक, मेवा ना मतकार ।
कायर जनता कारणै, देस गुलामी द्वार ।। 24 ।।

पतन देस री व्है परो, जतन हुवै ना जार ।
कायर पुरसा कारणै, दुसमी हाथा डोर ।। 25 ।।

वीर वरै हिव सू वरण, मान मौत वरमाळ ।
जीव लुकाता जीविया, कायर डर उर काळ ।। 26 ।।

बाजे रण री भेरिया, करै न ऊभा केस ।
फंद न आय कायरा, समभ्र सूर सदेस ।। 27 ।।

गरणावै घण गोळिया, लागी सीवा लाय ।
घर मे ओडर गूदडा, कायर मूंड लुकाय ।। 28 ।।

विपत देस मायै वणी, सतरू गाज सीव ।
ठंडा पडिया ठीकरा, कायर अवर क्लीव ।। 29 ।।

जिण धरती घण जलमिया, कायर अवर क्लीव ।
पराधीनता देस पर, नेखम नागी नींव ।। 30 ।।

गरिमा मान घटावियो, देस गुलामी द्वार ।
कायर री करतूत सू, होंव सेना हार ।। 31 ।।

कायर वद करतूतिया, दर दर जीवण दोख ।
लगै दाग इहलोक मे, पूछ नही परलोक ।। 32 ।।

सिणगार - सवैया

केस भुजग सुरग भयौ किरि भाळ टिको रवि ऊगत राजै ।
खजरण लोयरण चक भुवा सुल नाय छवी नथ वेहद छाजै ।।
पोयरण फूल सी हाठ पराक्रम बीजळ दत सुकामरण बाजै ।
जोवत जोवत नेरण थकै जग थोयल कठ सुहेट विराजै ।। 1 ।।

दोय सुमेर दिखै कुच देखत चद मुखा दिस जाय रिया ह ।
पाछाल भा हय छीरण कटी प्रभ रैंकर मेहन्दी रचायरिया हैं ।।
आगळ नख चमक नगा अग नाभिय रुप त्रिवेणी लिया हैं ।
जघ प्रभा कदली जिम जोवत होत हजारु हुलास हिया हैं ।। 2 ।।

राखडि वेरिण महेलडि भावक सेथक टीलक चादल वाळी ।
चाकरण सीस फुला फुलि मोरल वेसर नक्क अग्ट्ट रुपाळी ।।
काटऊ फूल नखा घडि कू डळ वीटल अेकुट चीड उजाळी ।
ताडक नागळ मादलिया मुद्र चावरण भाभर नार प्रभाळी ।। 3 ।।

हास हरादिक साकळि वाळिय बायूव चुडली पीव चितारै ।
काकरिण पू चिय ह हथ वाळड अरआगिनि य मेखला धारै ।।
नेवर बीछिया घूघरि घूघरा अेघडि पल्लडि नार तिहार ।
दूल्लडि पाडळि कावि प्रभारत माटमी साळ सिंगार सवारै ।। 4 ।।

बायल घाट पिताम्बर चोलऊ पीत कुसूमल जूड कसीदा ।
लाल रता गमगी कमखा कसबी पटोळी तन आरण कीधा ।।
माडी पटोळ सुहावणी सुन्दर केसर चदरण नेप सुबीधा ।
चूर अबीर कपूर गुलालीय तेल सुगधित वेरणीय दीधा ।। 5 ।।

दख मुखा प्रभ लाज रयौ ससि दत छबी लख कामरण दारी ।
लोयरण आभ ते पोयरण लाजत केम प्रभा घन फागत फोरी ।।

जघ प्रभा कदळी भुक जावत केहर खीरण कटिप्रभ चारी ।
होत सुगधित गेह हमे गति मस्त मराळ मी चालत गोरी ।। 6 ।।

चद रवी सिर न्याळ चढ्यो कुरण मार कटार रयो है सुगाकै ।
वारण दोय धनूरख किया कुरण मार रयो दव और मृगाकै ।।
लाल घटा खुल जाय लग्रो भच बीज चमक पडै धर आकै ।
दोय सुमेर दिखै छिति दोडत दें सरणो जिमि ऊपर दाखै ।। 7 ।।

सुन्दर गात सुबात अखै अवदात हियै दिनरात मदाई ।
साथ रहै दुख सुख्ख मे साथरण चात मना छिन अन्तर छाई ।।
प्रात उठै भट हाथ घटी पर वातहि वात मे ठाव भराई ।
सात सुखी घर कत सदा भळ आथ रुपी घर कामरण आई ।। 8 ।।

रीत कुळा मरजादीय राखग भाखरण बोल मधू वधु भारी ।
साळ कळा परवीरण सुपातर वीनरणी मे कछु नायज खामी ।।
जारणणहार मनेहिय सागर होत उजागर कीरत नामी ।
देखत होत हुनाम हिय दुति थाय हथा प्रभ साजन थामी ।। 9 ।।

जेव समै मजनी घर अन्दर सोय रही धरण केम सवार ।
आय पती ढिग बैसत आसरण लागत हाथ लखै सिर नारै ।।
जारणत व्याळ पिया भभकै सजनी कू बचारण उपाय विचारै ।
हाय भयातुर भाग गया पिव जागत नार अचूम्ब निहारै ।। 10 ।।

मेडि चढी धरण वेस सवाररण भाक हुवा भक यू लहराई ।
रूप घटा जिम आर रिझावत मोर मना बिरखा जिम आई ।।
वावट्यो पिव वेरण उचारत स्वातिय चाह मना हरसाई ।। 11 ।।

गावत देख पति हित आदर कामरण यू सिरणगार रियो है ।
भाळ मभ्भ चमकै विंदिया जग जारण लियो रवि उगग्यो है ।।
जारण घरणा जग हाथ जुहाग्त भिलेवणै अब दियो है ।
छाय प्रभा पखेम घर छोडत मोरिय मोर भू मध्य भयो है ।। 12 ।।

अेक मर्म सजनी सज सावण घूम रही मझ बाग बगीचै ।
बोल उचारत कोयल व्याकुळ आज रमै कुण कोयल नीचै ॥
नाक छवी सुवटो लख लाजत आ नयणा मिरगा चख मीजै ।
जांघ करै कदळी लख जघण सौरभ सू धरती पद सींच ॥ 13 ॥

आस लखी पिव री घर आवण झाक रही चढ नार झरोकै ।
गोर घटा जिम ह गरिमा तन आवत दीख गया पिव मोकै ॥
होत हुलास यु होठ खुलै हस बीजळ दत चमकत गोखै ।
कासिय ठाव धरै घर भीतर लाग रयाँ डर यू घण लोकै ॥ 14 ॥

कामण कुच गुम्बजिय मदिर भाव पयोधर नह भरै है ।
ताम्र कलस्स जिमि प्रभ ऊपर हाजर पाय विस्तार हरै है ॥
मूरत है तिण मे पिव री अर साझ सवार जुहार करै है ।
सीतळता बगसै नन भाजन जोवन मे रसहूत भुरै ह ॥ 15 ॥

पाय अमावस आय पिया घर सोळह नार सिगार सजायौ ।
देह दमक्त दामण ज्यू गरिमा मुख कामण चद मवायौ ॥
लोक अचू व वर हिय मे किम आज अमावस री ससि आयौ ।
देख कुमोदनी सागर मे खुस हाय घणी नन यू विकसायौ ॥ 16 ॥

नीर भराण गई तट सागर नार नवेल सिगार नवीना ।
व्याळ करी ससि केहर खजण सारस कोयल हस अरीना ॥
सागर हेक अचूम्भ भयौ मन अेकल साथ किया सब कीना ।
हेकण साथ हुवा तन हेकट नीर भरै घघरी जळ पीना ॥ 17 ॥

सागर म वर ओवत सुन्दर पोयण फूल प्रभा रद पाई ।
नाळ कमळ्ळ सुहाय निहारियै पखुडिया हथेळी प्रभ छाई ॥
नाळ उठी उलटी नभ ऊपर पखुडिया किम हेट उपाई ।
पोयण रै समवड्ड दमा सजनी वर ओवत आज जमाई ॥ 18 ॥

माग भरी सजनी सिर ऊपर जाणक बीज चमक्त जारी ।
भोर दुपार मुगाझ रु रात म अेकल मी अरदात निहारी ॥

बीज पड़ै घर आगण बीनज पास पड़ोस रु जाय पछारी ।
व्है चख चूं द पिया चख देखत ध्यान दियो सिर घू घट धारी ।। 19 ।।

हार गळै वधु नेहद छाजत और कटी कणदोर अपारा ।
साडी हरि तन छाजत सुन्दर रूप हरी धरती जिम धारा ।।
चीर चमकत गोट किनारियै रात जिया नभ राजत तारा ।
रत्नमणी चमकै तन ऊपर रात मझो घर जाय अंधारा ।। 20 ।।

साजन साझ सवेर सुभावत सीर सरीर सुदात महारौ ।
पूरण प्रेम पगै परणी जद पासहि पास रहै पिव प्यारौ ।।
दूर दराज गयो दिल दाझत दोडहि दोड टरावन द्वारौ ।
नण छत्री नित साजन नारिय नाह करौ नह नार ते न्यारौ ।। 21 ।।

केस घना सजनी घण कोरत व्यालिम रूप इसो नह भावै ।
व्याळ भखै खग देह जिनावर और मना डर लोग उपावै ।।
जेर वसै मुख व्याळ घणो खुद सेव रिझेव हि देखत खावै ।
सीतळ और सुगंजित साथण कामण वेस आणद करावै ।। 22 ।।

माग दिवी उपमा कव दामण दामण रूप उरावत दोळै ।
बीज पड़ै धरमाथ चमकत रै कडके धन गान कू रोळै ।।
प्रेम धरै तिण नै भट पूगत टूट पड़ै सिर माथ हि टोळै ।
आणद दायक माग सुकामण भेटिया अंग चढात हिलोळै ।। 23 ।।

रूप रची उपमा कव देवत नारिय भाळ लगी नव टीकी ।
सूर तपै धर देवन ऊगण तावड तेजिय लागत तीखी ।।
झाक मवै घुण सामिय सूरज जोवत अख लगै घण फीकी ।
भाव परी त्रिदिया परणी दत सागर नेह उदास मरीकी ।। 24 ।।

नण छत्री दिय सजण नाहर सजण वीट पतग भयै है ।
रूप कटार दियो वध नाहव जीव मरात कटार भयै है ।।

वायर ह उपमा हिरणी मम पोयण रुप न साय पख हैं ।
कामण नेण समौ नहँ कोड़ा छोट जाना छिन हुत छकं है ॥ 25 ॥

चादणी रात सजोग पिया सुख जागत जागत वात जमाई ।
नण लगैं टक टक्क निहारत जोवन गारत रात न जाई ॥
सागर नेह मभा सजनी पिव सापडवें दिल खोल सदाई ।
नीर पिया सजनी मछली तन नार अधार पिया प्रभ पाई ॥ 26 ॥

रूप धरा सम कामण धारत मेह समौ पिव तोय उखाणू ।
श्राय परी वरसै वरसा धर हौ हरियाळ हियो हुरसाणू ॥
मेह विना धरती कह कीमत साच लखावत ज्यू समसाणू ।
मेळ घणौ धरती अर मेह र जोग तिया सजनी पिव जाणू ॥ 27 ॥

चन्द्र पिया घण रूप चमकत कामण रूप कहात चकोरी ।
देख ससी हरखै हिय पछिम राह अधेरिय साय रु दोरी ॥
चद दिखैं नज मे नहँ श्रायर कम खिल्लत कुमोदन कोरी ।
देत रहौ दरसण नित प्रीतम जीवण प्राण करी चित चोरी ॥ 28 ॥

अेकहि जीव वपु दव दीखत साजन की सजनी चित चोरी ।
स्वातिय चाह करै जिम चातक तेम करै सजनी पिव तोरी ॥
डूगर मोर विना नह सोहत पीव बिना दिल कामण दोरी ।
बीज विहूण घटा प्रभ नाहक नार सिंगार पिया विन फोरी ॥ 29 ॥

चद विना निस जेम लखावत नीर विहूण लगै जिम नाडी ।
फूल विना गत वेलडिया जिम श्राख विहूण प्रभामुख वाडी ॥
छात विना घर भाय नगै जिम म्यान विहूण कटारिय काडी ।
तेम लगै सजनी विन साजन गोण हुई गरिमा तन घाटी ॥ 30 ॥

नींद निवार उठी सजनी नव वेस घटा बिखरी मुख सामी ।
नेंण रया श्रळसाय निसा सम फेलत भाळ बिंदी प्रभ नामी ॥

लाल कपोल निमान भयै छिन रोन रियौ दरमात्रा कामी ।
सीतळ नार लगै तन सारिय जेम मरोवर अधड सामी ।। 31 ।।

सापड मेडि चढी मजनी भट सोम उडारन मद्य मनाता ।
जेम भुजग चवै मुगता टप नेण गिरे जिम पोयण प्राता ।।
बीजळ मे जळ बूंद भरै जिम गोर करी दिपती तिय गाता ।
चार प्रभा ते भुकी मज कामण नेग करै क्रिव मे अवदाता ।। 32 ।।

आळस छाय रयो मजनी वप आगण आय लही अगडाई ।
जेम घटा लहराय रही नभ चद छबी तिण आय लुकाई ।।
पोयण फूल हिलै लहरा छिग जेम घटा मिहरा गळ छाई ।
नय पडी कटि केहर रे जिम मावर पर लगी दरसाई ।। 33 ।।

चदण लेप करै तन कामण चदण पेड सी लागत प्यारी ।
केम भुजग जियां मिर डोलत सोरभ मस्त हुवा इकसारी ।।
केहर कीर करी अर खजण भाव मराळ मिलै थिग भारी ।
लेत सुगन्ध पिया मन रीभन बारम जार हुवै बलिहारी ।। 34 ।।

कोयल खीज करै गळ कामण कारण तेण पडी रग काळी ।
लोयण भा हिरणीज रिसायत डर डर भाग रही दर पाळी ।।
सावळ रूप करी इण कारण मस्त गति तिय ली मतवाळी ।
छीण कटि तिण केहर खीजत कोप लियौ परगत्त हिमाळी ।। 35 ।।

जघ प्रभा तिय जोवत जोवत रीस किया कदळी भ्रम काटै ।
कामण तेज परा दुख दामण आवत जावत यूं करडाटै ।।
आम पयोधर देख अमूझत होत सुमेर गिरी रग हाटै ।
होठ प्रभा कुसुमावली कोपत ते कज धारन कोमल काटै ।। 36 ।।

सीतळता हिम माय विराजत नेज जिया रवि माय प्रकासै ।
नीर निवास करै घन काठळ तेरा भभा चिकणाहट वासै ।।

वास सुगंधित फूल सभा जिम नाम ज पावन गग निवास ।
तेम वसै सजनी मन साजन लेवत नाम तिरा हर सास ।। 37 ।।

नीर नखं मछळी घण सोभत जोत ठिकाण पतग प्रकासे ।
दामण श्राम घटा मझ दीखत मान सरोवर हस हुलासे ।।
चद दिख खुस होत चकोरनी वेल कुमोदनी जेम विकासे ।
तेम जचै सजनी ढिग साजन वारम वार श्राणद विलासे ।। 38 ।।

हात कमी सरदी तन हेत ज चेत वसत घणी श्रन चेती ।
साजन जीव जडी सजनी सुख छोट परा नह देवत छेती ।।
गोर प्रमाण घणी गिणगोरिय नेह अपार वधावत नेती ।
देव विजोग सजोग दयाकर लाभ ससारिय कामण लेती ।। 39 ।।

छात परा तिय ढोलियो ढाळत मास वेसाख वधु तप व्यापै ।
रात श्रमावस साजन राजन थाप श्राणद रु पूनम थापै ।।
चादणी रात हुलास चढे चित मोह अथाग सरोवर मापै ।
कामग भाग बडा सुख नारीय श्राज सजोगिय राग श्रलापै ।। 40 ।।

जेठ वढी गरमास घणी जद पोर श्राठू तन होत पसीनो ।
पास पयोधर ताप न व्यापत देख समी सुख सम्पत दीनो ।।
सीतळ केस घटा सजनी सम चदण सोरभ है तन भीनो ।
सीतळता सजनी तन साजन नेह उजागर नित्त नवीनो ।। 41 ।।

रोयण ताप श्रमाप रयो रत दीह छिया वधु हेरत दोडै ।
लूह लपट्ट भपट्ट रही जग जावत बाहर नू सुख मोडै ।।
अधड वाज रयो मिरगानत चद प्रभा घण तेज न चोडै ।
होत व्यतीत समै सुख सायत जा घर पीव जोडायत जोडै ।। 42 ।।

मास असाढ रही घण उमस तावड तेज तना तडफायो ।
जावडयो पिव गोल उड नभ व्है सजनी पिव साथ सवायो ।।

नाय डरू पिव हू नजदीक ज दामण क्यू करडाट दिखायाँ ।
मूझ पिया मुद नेय लही जा देर घरा पिव नोगेट आयो ।। 43 ।।

साजन वास विलास रहे मुख मारण माग मुवास सुरंगो ।
चादणी रात चमकत चदर चितव चचळ गा चित चगो ।।
प्रेम प्रतीव पिया पुळ पोखत पास जिया परकाम पतगा ।
बीजळ रात सुहात हियै विच साजन आवन म्मै दुख भगा ।। 44 ।।

काठळ कालिय रूप किया वस आज नमी उतराद अनोखी ।
बीजळ री भळझाट घनामझ चाल लगै सिहरा गळ चोखी ।।
पूरण आस धरा पर पावत रामत गावड दन्दर राखी ।
सावण 'लखमण' आभ सबै सुख पूर प्रभावित कामण पोखी ।। 45 ।।

मेह घरा बरसै मुसळाधर मेडिय आगण छाट न मावै ।
प्रेम वडै अदवाज नरै पिव आणद जोवन सावण आवै ।।
बीजळ री परडाट सुणै वधु जोवत पीव गळै लग ज्यावै ।
'लखमण' सावण सोम नहै नभ प्रेम पयोधर पार न पाव ।। 46 ।।

भींज रही धर आ बरसात र धीर वधु पिव सग म धीजै ।
ताळ सरोवर नीर भर तर दादुर भा पुरजोर सुणीज ।।
कोयल मोन पिलोळला कामण दामण सौ वप आज दुणीज ।
साजन राजन हू मजनी मुप 'लक्षमण' सावण छट न लीजै ।। 47 ।।

है हरियाळ उछाळ बहै जळ ताळ भर्या ठिग पाळज ताइ ।
देह छुया बिजळी तन दाडत सोडमों सोळै सिंगार सजाई ।।
होत प्रवेस सनव हितू हिव मानत जोवन धूम मचाई ।
जीव चराचर आज सुखी जग सावण साथ रखाव सदाई ।। 48 ।।

भूल गई तन व्याधिय कामण सावण साथ पिया सुखकारी ।
भूख लगै न लगै तिस भूल न नाय थक प्रिय आज निहारी ।।

काएा करै सिएागार कलेवर चाक लगै जम रै अखियारी ।
सावरा श्राम पिया सुख वामिय पास रह् सजनी नितप्यारी ।। 49 ।।

सावरा तीज तिया सजियो तन भा सिंएागार सजायो भारी ।
लेरियो सावरा री खुद लेवत अंग उढेलत नेह् श्रपारी ।।
जोतिय लाभ लियो जग जोबन उम्र मनेव की कोध हजारी ।
सावरा लक्ष्मरा छाय रयो सव प्रोढिय नार नवेल निहारी ।। 50 ।।

भादव मास घटा घनधारज मेह् श्रपार श्रबै भड़ लागी ।
है हरियाळ उछाळ धराभक जोवन चाव घरोघर जागी ।।
सेग सरोवर ताळ भरै जळ श्राज हुई विपदा सह श्रागी ।
बादळ माय छिपै ससि पूरए भाळ रही वधु साजन भागी ।। 51 ।।

तावड़ तेज श्रासोज तपै तन धीरज छोड छियादिस धावै ।
पावत प्रेम अवेर निसा प्रिय जोवन मेर पे फेर हुज्यावै ।।
साख पर्वै निय प्रेम पवै सुख ल्याखत जीवएा श्राणद लावै ।
चादरगी रात मे चद प्रभा चित कामरा साजन कोड करावै ।। 52 ।।

कातिक मास किलोळ करै कुळ कीरत कामरा साजन केरी ।
ठड वढी घर भीतर सावत मीठा मतीर र बेर ककेरी ।।
दामरा दह् दिवाळी सु दीपत श्राम उमेद रखात श्रछेरी ।
जोन जळै दिन रातिय जोवन साथ रहै प्रिय साभ सवेरी ।। 53 ।।

मिगसर मास सरद्द वधावत जोबन नेह् श्रपार जगायो ।
तेज श्रबै सजनी तन साजन श्रारिय भीतर ढोलियो श्रायो ।।
मोसम जोवन री ज श्रमोलक वेट जरा इम रत्न कवायो ।
चद्रमुखी दरस मुख साजन अक नही मव लाभ उठायो ।। 54 ।।

जाग वढ घरा जोवन मे जुत साज वढावत पोस महीना ।
ठड सभा पिय टाळरणो तन तेज नवै सजनी तन दीनो ।।

लार पडी मरदी बचवा हित लोग उपाव तिया तव सीना ।
रक्तिय चाप घटै तन री रत भा मग्दी सुख जोवन भीनो ।। 55 ।।

माघ पडी मरदी गत मथर ग्रन्तर थी ग्रनुराग उपायों ।
जोवन रो कम लोय लियो जुत ग्रोर पताझड मौसम ग्रायो ।।
पड छवी ग्रजहू न पावत साजन कामरण माथ सवायों ।
ग्राय गयो रुतराज बसन सु जार ग्रव घरण जोवन खाया ।। 56 ।।

फू पळ फूट रही तन पेडिय ग्राग बगीचाय कोयल वाल ।
फेल रयो ग्रनुराग मनाफळ डील निया रस जोवन ठोलं ।।
दूर दराज पिया घर दोडत प्रम खिवाडिय ग्राकर खोलं ।
ग्राभ बढी घर सुन्दर ग्राखिय ते जिय प्रम ग्ररोघर तोल ।। 57 ।।

पाय बसत लगी तिथ पाचम सारदा मात कू माथ मनावं ।
देय सुमत्त सुगत्त दयाकर छोळ मना रख कीरत छाव ।।
पीत पिताम्बर वम गियो वधु गीत घणा सुरमत्तिय गाव ।
माथ रखी मजनी ग्रर साजन चाह भली हिक कामरण चावं ।। 58 ।।

फागरण मास वसत फळोफळ ग्राय पवाण नजीक उनाळो ।
तेज हुवा मभ रेत उड जिम साजन नार गुलाल उछाळो ।।
ढोल बजै ग्रर गेरिया नाचत नार हुई प्राढा नखराळो ।
जोवन फागरण याद लियो ग्रग रावत नाचत प्रेम रुपाली ।। 59 ।।

ग्राळग कागज ग्राय गयो ग्रर भा उर फागरण फेलत भारी ।
नार सिगार नवीन सज नित दाराय छोडग ग्रेथ दीदारी ।।
उत्तर देत ग्रजू नइ ग्रावत फागरण मास लिया ग्रधिरारी ।
लक्ष्मरण फागरण मोज सखी प्रिय बालम फागरणरी न विचारी ।। 60 ।।

जावरण रुत वियो पिव ग्रावहू टूं डर नावरो नाय हटेगो ।
ग्रार सजो सुख साजन सगत मोय विजोग मे मान घटेगो ।।

फूल रया तर श्रोर नताफळ सूक रयौ तन मोय विमगौ ।
कोयन वोल लगै कटु वानज रे ! व्रिन साजन जीवन ऐसो ।। 67 ।।

ढोल वजै तन काम सजै पिव नाय घरा मन मोय मरेगी ।
नाचन गाव गवाड विचै घरा गेरियै डडिय मव्द घुरेगी ।।
श्रोर सहेलिया है पिव मगत मव्द मनेद मो कान पडेगी ।
श्रेम दमा दुखदाई विजोगरा वारम वारहि जीव वळेगी ।। 68 ।।

चदिय चादनी मद लखै चित फागरा फद मनावन फेरू ।
रेग जगै चख नींद न श्रावत माय पडै दय रूपिय मेरू ।।
नेरा नहै जळधार निमा दिन श्रालाय चीर मू केम श्रवेरू ।
डूव रही यू विजोगिय सागर हाय ! श्रवै कित साजन हेरू ।। 69 ।।

वत्त वसत रही तन वाळन मालन लूह इमी हिव माई ।
नीर छुया तन पे छम वोलत जारा जगै तन प्रीत सवाई ।।
नार घरा निसमाराय नाखत जीवरा श्राज हुवौ दुखदाई ।
गोट हुवे हिव भीतर दाभत छाय रही घर माय धु वाई ।। 70 ।।

चेत मभा हिवडो घरा चेतत नेह मरोवर लेत उफारौ ।
भूख लगै न भखै मुख भोजन होय रयो मन मोय हिराराौ ।।
भूलत वाज फिरू घर भीतर जेम फिरै बेल जोतत घारौ ।
श्रावरा श्राम रखू पिव री उर भूल गया पिव तो घर श्रारौ ।। 71 ।।

रास रमै मुखवास जमै रस भाग वडा मधु मास मभारी ।
गेहू चरा सरसू पकिया श्रन तेम पकै पिव मगत प्यारी ।।
पीव विना तन मा इम दाभत दाभत माख दखै जिम मारी ।
रूप निखार मिटै विन साजन वारि विना मछली जिम हारी ।। 72 ।।

गोर दुखी श्रठपोर घरा मरा विलख रही गिरागोर तिवारा ।
वालम तीज चूकाय दई जिम कोरा कढाय दी श्राडिय वारा ।।

पीवहि पीव मे जीव रह्यो पन श्री जिन पीव वे नाय खटगा ।
पी परभात फटै न फटै पण जीव तिया को जरूर फटगो ।। 61

हूं ग्ररदास दहू कर जाडत वालम यू नह नाग विमारो ।
माग दही नलवारिय धाग सू यू तडछाय पिया मत मारो ।।
जोवन भार मम जुत जीवरा पूरण ग्राणद माथ तिहारो ।
जावण हेत नयो किम जावन इ मुख सू किम केहू सिधारो ।। 62

चाद ग्रव ठमजा इग ठाडहि मत रिखी नह मोवन जाग ।
सूरज ग्राट लुकाय नहा हरि ओर न शाय सकै वस ग्रागै ।।
वद करी घडिया मवही जग तारीख तिथ्य थमावत मागै ।
हे! हरि ग्राज निमा थिर कीजियै प्रात हुवै न पिया घर त्याग ।। 63

है सुखवास पिया तव सगत चार दिना तक जोवन चावो ।
नारम धार नही मिनखा तन चोरियासी जूण मे अेकर ग्रावो ।।
खाण कमाण कमी नह पौरस ग्राळग गे टर नाय उपावो ।
पान पडू वर जोड कह प्रिय ! छोड तियारू पिया मत जावो ।। 64

जाच लही पिव ग्राळग जावण वेरण ग्रा परभात भई है ।
साज समाळ रखाय समानज मात पिता पिव धोक दई ह ।।
मेल मुखा गुड पीव चल मग कामण नेणज सन्न भई ह ।
होय ग्रचेत पडी धर कामण नेण भरै जळ धार वई ह ।। 65 ।।

पीव धरै पग नण भरै तिय चोळ हुवा सब भीगत गीला ।
खीण हुइ परभा पल भीतर जेम सपूरण होवत लीला ।।
जीव नहीं समळै घण व्याकुळ भीतर भाव मिटै गरवीला ।
वोल सकै न रखै तिय अतर वत ज पार किया धर टीला ।। 66 ।।

वरण गाज नमत भई पिव ग्रोळग काज हुवा परदेसी ।
सीतळ मद सुगन्ध समीरज ग्राज विजोगण रो हिव लेसी ।।

फूल रया तरु ओर लताफळ सूक रयौ तन मोय विमेसी ।
कोयल बोन लगे कटु कानज रे ! बिन साजन जीवन रेसी ।। 67 ।।

ढोल वज तन काम सजे पिव नाय घरा मन मोय मरेगो ।
नाचत गाव गवाड बिचे घण गेरियें डडियें मद्द धुरेगो ।।
ओर महेंनिया है पिव सगत सब्द मनेव मो कान पड़ेगो ।
जेम दसा दुखदाई विजोगण बारम बारहि जीव जळेगो ।। 68 ।।

चंदिय चादनी मद लखे चित फागण फद मनावत फेरू ।
रेण जगे चख नीद न आवत माथ पडे दव रूपिय मेरू ।।
नेण वहे जळधार निसा दिन आलाय चीर मू केम अनेरू ।
डूब रही यू विजोगिय सागर हाय ! अवे कित साजन हेरू ।। 69 ।।

रुत्त वसत रही तन बाळन मालत लूह डमी हिव माई ।
नीर छुया तन पे छम बोलत जाण जगे तन प्रीत सवाई ।।
नार घणा निसवाराय नाखत जीवण आज हुवौ दुखदाई ।
गोट हुवे हिव भीतर दाभत छाय रही घर माथ धुवाई ।। 70 ।।

चेत मझा हिवडो घण चेतत नेह सरोवर लेत उफाणो ।
भूख लगे न चखे मुख भोजन होय रयो मन मोय हिराणो ।।
भूलत काज फिरु घर भीतर नेम फिरे बेल जोतत धाणो ।
आवण आस रखू पिय री उर भूल गया पिव तो घर आणो ।। 71 ।।

गास रमे सुखवास जमे रस भाग वडा मधु मास मझारी ।
गेह चणा सरसू पकिया अन तेम पक पिव सगत प्यारी ।।
पीव विना तन मो इम दाभन दाभन साख दखे जिम सारी ।
रूप निखार मिटे विन साजन वारि बिना मछली जिम हारी ।। 72 ।।

गोर दुखी अठपोर घरा घण विलख रही गिणगोर तिवारा ।
चालम तीज चुराय दई किम कोण कढाय दी आडिय वारा ।।

आज था खोय दियो सुम ओसर आवत माळ मे अेकण वारा ।
तोर तपै उर नेह तणो पण गोर दुखी धर माय गिवारा ।। 73 ।।

मेदि नगाय रही कर कामण दूज तणो मधु मास सिभारो ।
होत प्रफुल्लित चित्त सजोगण गत्त विजोगण रैं दुख लारो ।।
आवत याद पिया मन भीतर सागर नेण उठै जळ सारो ।
लोयण नीर रळै कर ऊपर मेदि उतार दई जळ धारो ।। 74 ।।

तावड तेज सुखी नह सेज करी पिव जेज हुवा कर हाणी ।
मास वेसाख तप धर भीतर बाहर सोपणो है दुखदाणी ।।
फेन रही धर चन्द प्रभा किरणा चुवव नम तीर समाणी ।
राजन छोड गया परदेसज रात चखा जळ ढोळत राणी ।। 75 ।।

रोयण तावड तेज तपावत पथ चलै दुखिया तन पूरो ।
छाह ऊभा नर नार पसु तन सक्त करावत मामन सूरो ।।
सीतळना तन आज दहै कुण लेय गया मन साजन दूरो ।
बाहर री बळती तन दाभत लाग रयो भय भीतर लूरो ।। 76 ।।

जेठ चल मिरगा मझ अधड तेज हुवा तन तीर चुबोव ।
सून लगै सब पीव विना जग भीतर भीतर कामण रोवै ।।
पाळण कौण अबै दुखिया तन हालण हीण छवी तन होवै ।
मार मती विलखाय मनमेळू जीव निमा दिन वाट सुजोव ।। 77 ।।

वायु दुती हिक काम करी हमरी पिवजी परदेस विराजै ।
जाय दहो समचार उगा मन कामण आज विजोग दाझै ।।
नेण लगै ढिग नीर न्हावत मग सहेलिया कामण साजै ।
साजन रे पग रो रज नेयन ओर सबै समचार लै आजै ।। 78 ।।

आय गयो सजन नभ बादळ मास असाढ भरा तपताई ।
नेय सुदो धर मेह मड्यो पण पीव लही सुद कामण नाही ।।

ऊमस श्रा गरमास तणी गत श्रोर घणौ श्रमूर्भ हिन माही ।
श्रोळग छोड श्रवै घर श्राविय सून पणी घर मेटियै माई ।। 79 ।।

नाल भरै जळ खाळ कर वर नाळ नदी जळ नेय उताळी ।
जोत रया किरसाण घरोघर भेर करी वर पै वरसाळी ।।
गाज करै नभ श्राज खुमी मझ मोय डरावत बादळ काळी ।
बीज चमकत श्राभ तणी बस ठोड दई तज काळजौ माळी ।। 80 ।।

चातक टेर लगाय रयौ नभ पीवहि पीव उचारत बाणी ।
लूण गिरै जिम घाव परा श्रर ताव तिया पर सीतल पाणी ।।
ग्रीख मझा श्रगनी तप लागत रात अधेर श्रमावस श्राणी ।
श्रेक हू श्रेक वद्‌यौ दुख श्रतर मथर जीवण री गत माणी ।। 81 ।।

सावण भावण है सगळे जग तावण री गत मो हित ठान ।
घोर घटा चमके चपला मित्र सोर मिलौ पिव देवत कानै ।।
बादळ गाज सुणै तन दाझत भीतर भागत जीवण छान ।
स्याम श्रब घर श्राव सही घणस्याम घणोज सतावत म्हानै ।। 82 ।।

मेह घणौ वरसै परसै वर हा हरसै वर व्है हरियाळी ।
भीतर कामण मोच रही चख नीर बया बणगी इक नाळी ।।
मेह थकै रुक जाय परां वहवै सजनी चख नीर उताळी ।
सावण साथ रयौ नह साजन कामण होत वपु गत काळी ।। 83 ।।

लौ चपला सिहरा गळ लागत कामण श्राज फिरै गळ लागै ।
बादळ श्रोट करी ससि वधण रधण कामण री मन राग ।।
हाय पहाड समौ हिव ऊपर साजन बेदरदी दिल दागै ।
जीव चराचर श्राज सुखी जग रसै जग री दुख कामण सागै ।। 84 ।।

ठड वदी कपडा गुदडा सग लाग रही भड सावण सारी ।
गोण हुई छित्र कामण गातिय भाव विजोगण री मत हारी ।।
श्रास तणी सजनी मन भावण तावण री गत पाथ पियारी ।
लक्ष्मण सावण बीत गयौ पण साजन श्रावण री न बिचारी ।। ८

भादव मास घटा घण वादळ भीजत भूमी लगी झड भारी ।
घाम हरी फमली घमघोरम ठौरम ठौर सवा दिल ठारी ।।
पूरव पौन चलै परसै नपु लागत तीर विजोगण लारी ।
डेटर वोल विजोग डरावत कोयल वोल न लागत कारी ।। 86 ।।

वापग्गी नरमी वरम्या घन आग विजोगण रै हिव फूटै ।
पास पडोस सजोग पुकारत वाण विजोग इमी धर वूठै ।।
रात खिवै विजळी हिव राजत छाप अभागिय सास न छूटै ।
लूट लया तकदीर सुलेखियै राम जदै तन कामण रूठै ।। 87 ।।

मास आसोज कनागत मगण ओर विरामण जीमण आवै ।
वारम वार कहै किन वालम आम दवी कर याद जगावै ।।
नीर चखा वढियी निसनारिय शोसिय रूप धराज उपावै ।
नार दुखी घर वार दुखी नित खामद कागद नाय खिनावै ।। 88 ।।

कातिक मास करी अस कामण देवसी पीव दरस्स दिवाळी ।
आगण नीप सू माडणा माडत आलय वालिय कीव उजाळी ।।
तावण आय गई अन तेरस ओर उडीक कराय उताळी ।
कातिक मास उडीक करावत वालम कामण आय न भाळी ।। 89 ।।

मिगमरी मास वढी सरदी मझ माय नही गरमास मसोडा ।
फतिय वाट जोनै घर कामण ठीक लगै नह तौ विन ठोडा ।।
पोस वढी सरदी तन पाडत खालड खोम रयौ विन जोडा ।
ओळग छोड अवै घर आवियै खामद धार लहौ किम खोडा ।। 90 ।।

सोरम जेम वसै सुमना सग सूरज तेज वमै तप सागै ।
सीतळ वाम रयौ समि सगत ज्यू सवदा मझ अरथ जागै ।।
वादळ मे चपला जिम वामत लार जिया मवरा मधु लागै ।
माय वसै सजनी हिय साजन आवत याद मना अनुरागै ।। 91 ।।

पोयण नेण हुवा दुख पावत पीत अरु घु धळापन पायौ ।
सावळ होठ हुवा दुख सगत मानत चद मु डो मुरझायौ ।।
उनत कुच्च तणी अवनीतिय जेम पठारिय रूप जमायौ ।
छीण कटीज हुटी छिव हालत लो कदळी जग नाव लजायौ ।। 92 ।।

डीगळ केम हुवा दुख पीगळ माग चमक पडी गत मोळी ।
भाळ बिंदी बिखरी दुख भोगत खोळन चोळ सुपोळिय खोळी ।।
हार सिंगार दिया धर आलय सूख गई फमला जिम रोळी ।
कोण अब ओळखाण करै तिय हा हिरदा मझ हालत होळी ।। 93 ।।

भोर उठै सजनी तन भाळत छीण प्रभा हिव देखत छीजै ।
सूरज देख बढै दुख सगत धारत याद तिया नह धीजै ।।
दाझत देह दुखीज दुवारयि केम भुलावण वात करीजै ।
ठडक पोर लगै चित ठोकर साझ पड्याज विजोगण सीज ।। 94 ।।

रात पडी हिव माह रळावत नीर उफाण कु रोकत नारी ।
सेज पडी निस पोर गई सुद खोय दईज विजोगण सारी ।।
आधीय रात अचेत उठी अर नार नभा धर दिस्स निहारी ।
तूटत आज हियौ बिलकै धण त्याग दहू किम याद तिहारी ।। 95 ।।

माघ गयौ अर फाग गयौ मझ बालम चेत अचेत बितायौ ।
जेठ बेसाख असाढ बळावत पीव तणौ तन भेट न पायौ ।।
सावण भादव मास आसोज ज कातिक मिंगसर पोस कवायौ ।
लक्ष्मण पीव न याद लह्यो चित कामण माल अकाज गमायौ ।। 96 ।।

मार दहोज कटारिय धार सू मार पिया विलखाय न मारो ।
सागर बीच विजोग पडी घेरियौ मो हिय जगड भारो ।।
हात थढ़ाय पिया गत हेरियै डूबत नाव विजोगण तारो ।
लक्ष्मण याद करो चित लायकै बालम याद न नार बिसारो ।। 97 ।।

वार गिणू तिथ सार गिणू पुनि कोट तिवार अपार कराऊ ।
काग उडावत आण पिया घर सूण सरोदा हमेस लिराऊ ।।

हालत ही हिचकी पुस होवत जेम पिया घर आजहि पाऊ ।
लक्ष्मण आस निरास करी पण वालम याद किया विसराऊ ।। 98 ।।

सूम किती निसराय दही पण हेक टको न देवण वारै ।
अब नयँ चख रोय गमावत भेस नयँ जिम पाठ उचारै ।।
छाट पड़ै चिकना भटका पर ठेर सकै न जिया हिक वारै ।
पत्थर मेल दियो हिव ऊपर वालम ना अनुराग निचारै ।। 99 ।।

जीवण जोत बुझै बळती जग तेल उमगिय खूटत आखी ।
वाट रही कम आस तणी अब नाय निरासिय अधड नाखी ।।
ओमर वीत गयी अति उत्तम आ अनुराग झरोकिय झाकी ।
लक्ष्मण जावन नाय रहै थिर आ परवास ह च्यार दिनाकी ।। 100 ।।

ससार असार

गीत सोरठ

भजो हरी नाम प्रात, मुरगा चलेगी साथ ।
मोई छ जीव ग्राधार, रटो दिन रात ।।
सारा छै झूठा ससार बधना वाधै बेकार ।
स्वारथ री खेल सारो, घणो कर घात ।। 1 ।।

मिनख जमारे माय, दूर दिन हाय हाय ।
कमाई रो पार कानी, लोभी ललचाय ।।
जदै लगै काळ झाट, विगडसी ठाट वाट ।
छोडणी पडसी छेल, ससारी सराय ।। 2 ।।

हजारा लाखा सू हेत, चित मे ब्योपार चेत ।
सूमपणो लियो साथ, दान नही देत ।।
भू डी मत वाण आथ, राम नाम हिये राख ।
कोडी साथ चलै कोनी, रम ज्यासी रेत ।। 3 ।।

पच पच मरै पूर, दाळद हुवै न दूर ।
हरी सू छोडियो हेत, त्राथी कामी कूर ।।
भर वसै पाप भार, दुख रो प्रवेस द्वार ।
लागसी तिवा रै नार, जमडा जरूर ।। 4 ।।

भिलिया मोह रो जाळ, कोनो छोडै तनै काळ ।
पुत्री वहू ग्रौर पूत, झूठा छै झझाळ ।।
सुख मे ससार साथ, राजी रहै दिन रात ।
दुखा माय जाय दूर, टोगडिया टाळ ।। 5 ।।

हालत ही हिरनी मुग तेरत अम तिला मर पाारि पाउ ।
नम्मगा माम तिराम मगी पगु वामम माम रियो तिमगऊ ॥ ९८ ॥

गूम रितो विगराम म्हो पगा हर टगो र दगुल धार ।
जेध नग नग राम गमावा नग नग तिम पाठ उपार ॥
घ्राट पट तिरना मटरा गर टर गम र त्रियो हिर यार ।
पचर मन रियो तिर काग यानम ना मपुराण विचार ॥ 99 ॥

जीवण जान मुभ नरगी जग तन उगागिम गुटर माग्गे ।
नाट नहीं नम माम गगी मव नाम निगगिम अग्रह नाग्रो ॥
मागर पीत गयो मति उत्तम मा मपुराण भगानिय भासो ।
नम्मगा जानर नाम नहै पिर मा मन्याम है न्यार दिनांरा ॥ 100 ॥

ससार असार

गीत वीरकठ

भजो हरी नाम भ्रात, सुरगा चलेगो साथ ।
श्रोई छै जीव आधार, रटो दिन रात ।।
सारो छै भूठा ससार वधना वाधै वेकार ।
स्वारथ रो खेल सारो, घणो करै घात ।। 1 ।।

मिनख जमारै माय, हर दिन हाय हाय ।
कमाई रो पार कोनी, लोभी ललचाय ।।
जदै लगै काळ भाट, बिगडसी ठाट बाट ।
छोडणी पडसी छेल, ससारी सराय ।। 2 ।।

हजारा लाखा सू हेत, चित मे ब्योपार चेत ।
सूमपणो लियो साथ, दान नही देत ।।
भूडी मन वाण माख, राम नाम हिये राख ।
कोडी साथ चलै कोनी, रम ज्यासी रेत ।। 3 ।।

पच पच मरै पूर, दाळद हुवै न दूर ।
हरी सू छोडियो हेत, क्रोधी कामी क्रूर ।।
भर फसै पाप भार, दुख रो प्रवेस द्वार ।
लागसी तिका रै लार, जमडा जरूर ।। 4 ।।

झिलियो मोह रो जाळ, कोनी छोडै तनै काळ ।
पुनी वहू ओर पूत, भूठा छै भभाळ ।।
सुख मे समार साथ, राजी रह दिन रात ।
दुखा माय जाय दूर, टोगडिया टाळ ।। 5 ।।

इतौ किया अभिमान, धरै नही थोरा ध्यान ।
आमास मे रखै आख, कोनी देवै कान ।।
मना नही भावै मोद, जवानी म फाटै जोध ।
भपेटै काळ रे भिलिया, कट ज्यासी रान ।। 6 ।।

चित सू सवारै चाम, अतर फूलेल आम ।
जोवन गति मे जीव, करै काम काम ।।
सुन्दर कामरण स्नेह, दपटीजी जी मे देह ।
अेक दिन आसी इसौ, ठायौ मोत ठाम ।। 7 ।।

स्वारथ अपणै सीर, तिकडमी चलै नीर ।
ऊधा सूधा कर आप, मारै बठौ मीर ।।
भरिया धना भडार, काडी आडी जिरै कार ।
धरिया रेजासी धरा, छूटिया सरीर ।। 8 ।।

हरी सू नढावी हेत, चित मे रखावी चत ।
सदनीती रिया साथ, जाणौ जूणौ जेत ।।
दहौ सरदा मारु दान, सबा करौ सनमान ।
कूडा झूठा नही काज, लोकै जस लेत ।। 9 ।।

दुखा नही दिलगीर, सुखा नही सूरवीर ।
धरम करम धीर, साचै आछै सीर ।।
लगन हरी मे लीन, मोह् जेम जळमीन ।
(वारी) लोकै परलोकै लाज, राखै रघुवीर ।। 10 ।।

औरत-आभा

दूहा

कामण जगरी कीरती, गेहा तणी गुमान ।
मान मिलै मरदा मुलक, खरी भरी गुण खान ।। 1 ।।

बालपणै घर बापरै, लडियाँ बेयक लाड ।
श्राडा भाई श्राविया, जग देखै हित जाड ।। 2 ।।

गिणत करै नह गेह रा, मिणत न सधै मोह ।
बालपणै घर बायली, देख दुभाता दोह ।। 3 ।।

भिन्न-भिन्न देख दुभातडी, मोळी कर न मम्म ।
जण जण री मन केवटै, धिन धिन तोय धरम्म ।। 4 ।।

देवण माता सुतन न, लावै चीज लुकार ।
बैठी देखै बायली, स्वारथियौ ममार ।। 5 ।।

लेव हाथा लाडका, चोखी खावण चीज ।
रूळ जग पटकै रीम री, बैना ऊपर बीज ।। 6 ।।

भगनी राखै बीर रौ, लोकै तन मन लाड ।
बीर न भाई समझवै, केवा बसा काड ।। 7 ।।

रहै काज मे रात दिन, जतै न पर घर जाय ।
परण्या पाछै पामणी, बाजै पीहर माय ।। 8 ।।

पीहरिया परणाय नै, मेल पर घर माय ।
कामणिया मन केवटै, थिर ससुराळै थाय ।। 9 ।।

उतो किया अभिमान, धरै नही ओरा ध्यान ।
आकाम म रखै आय, कोनी देवै कान ।।
मना नही भावै मोद, जवानी म फाटै जोध ।
भपेटै काळ रे झिलिया, कट ज्यामी रान ।। 6

चित सू सवार चाम, अतर फूलेल आम ।
जोवन गनि मे जोव, करै काम काम ।।
सुन्दर कामण स्नह, दपटोजी जी मे देह ।
अेक दिन आसी इमो, ठायो मोत ठाम ।। 7

स्वारथ अपणै मीर, निकडमी चलै तीर ।
ऊधा सूधा कर आप, मारै ऐंठो मीर ।।
भरिया धना भडार, काडी आडी जिरै कार ।
धरिया रेजासी धरा, छूटिया सरीर ।। 8

हरी सू नळावो हेत, चित मे रखावा चेत ।
मदनीतो रिया साथ, जाणो जूणो जेत ।।
दहो सरदा सारु दान, सबा करो मनमान ।
रूडा झूठा नही काज, लावै जस लेत ।।

दुखा नही दिलगीर, सुखा नही सूरवीर ।
धरम करम धीर, साचै आछ सीर ।।
लगन हरी म लीन, मोह जेम जळमीन ।
(वारी) लावै परलोकै लाज, राखै रघुवीर ।।

आटो नह घर आपरै, धाटो वडियो गेह ।
काठो मन नाही करै, दाटो दै दिल देह ॥ 21 ॥

चोखै पथ नाही चलै, कूलखणा रो कत ।
हारण सद मारग हितु, कामण अरज करत ॥ 22 ॥

रुखी खावै रोटिया, धीणा विन घर धान ।
कमर पडै ना पामणा, जवरेली जुजमान ॥ 23 ॥

पट फाट्योडा पेरवै, नह गैणा रो नाम ।
लज्जा राखण लोक मे, कामणिया रो काम ॥ 24 ॥

टूट्योडा सह टापरा, तिडनै भीता तूट ।
चोमासै टापर चवै, खिलसा ज्यावै खूट ॥ 25 ॥

टपकै सवदिन टापरा, ईनण गीलो ओर ।
विनणिया विलखै रगत, दोऊ टोटो दोर ॥ 26 ॥

चवतै चूलै चोगना, वर परिवारी काड ।
करै रोटिया कामणी, मावै मेण्यो माड ॥ 27 ॥

आवै ना मन ईसको, छावै नह तन छीज ।
छोटी मोटी छान मे, चावै कामण चीज ॥ 28 ॥

मुद राखै खुद री नही, धरै वरै रो ध्यान ।
पाटा मे गाटजगी, गोरडिया री ग्यान ॥ 29 ॥

हरगज इमडा हाल मे, हुवै न धण हैरान ।
सपट सू वर सामनो, उपजावै मुळ ग्रान ॥ 30 ॥

पाई हरि परताप सू, मुळयती धण वर ।
हरगज हुवै ना हिन्द मे, अपणायत री अन ॥ 31 ॥

गुळयनी री कीरतो, निरमळ ज्यू सर नीर ।
सजवनी रह मोन मे, मतवतो रो मीर ॥ 32 ॥

देस-दसा

गीत मनमोद

बिगड रही दसा अणूती भारत, अर दिन आरत आवै ।
सुद लेवो मोचो रै सासक, मोजा किया मनावै ॥ 1 ॥

निरधन रै दाणा घर नाही, भूखा रात वितावै ।
टोटा मे झूझै टाबरिया, कामणिया कुरळावै ॥ 2 ॥

मजूरी नही मिलै मुलक मे, बडी घणी वेकारी ।
पूत फिरै रुळता पढियोडा, रै नाही रुजगारी ॥ 3 ॥

सरकारी नोकर दुख मागै, झूझ रिया नित जोरा ।
कमरतोड मू गाई कारण, पीळा मुख अठपोरा ॥ 4 ॥

घर घर माय बिमारी घुमगी, साधन हीणा सारा ।
फुलोभी डाक्टरा रै कारण, रतन रया उणियारा ॥ 5 ॥

गुरु महिमा मास्टर की गारत, बाळक सामी बोलै ।
सगन बद सोकीन सिनेमा, छाती पढिया छोल ॥ 6 ॥

जरस्त री चीजा र जाणक, पापी कवण नगायो ।
मिलणी अगत ऊपरा दोरी, बोपारी भरमायो ॥ 7 ॥

चीजा मे भेळी कू चीजा, लाभ मिलावट लीनो ।
मजग नही अफसर सरकारी, के रिसवत कज कीनो ॥ 8 ॥

भिसटाचार देस मे वाप्यो, विण मे हाथ बटावै ।
कोडर घचिया है ओडा मे, गुण ना रिसवत गावै ॥ 9 ॥

भूठा नै इज्जत सू जोड़ै, साचा नै सिरकावै।
धन री पूछ रही भारत घर, पापी ग्रासण पावै ॥ 10 ॥

छणिया जाय अधर ठलाई, वणिया नर व्यभिचारी।
दण्ड नही न्यायालय देवै, अपराधा अधिकारी ॥ 11 ॥

पिवणिया नर छोड न पाया, उपाय करण उतारू।
बन्द नसा र बावजूद ही, दीखै घर घर दारू ॥ 12 ॥

दारा नै धोळै दोपारा, छुट्टा गुण्डा छेड़ै।
मायत बठा पुलिस सिपाई, अग न दुस्ट उधेड़ै ॥ 13 ॥

गळै बहता थका गरीबा, पड़ै सिपाई पाछै।
जड़कावै धमकायर जेबा, ग्रोरू बोलै ग्राछै ॥ 14 ॥

जुलम करै काटणिया जेबा, जहर उगाळ जीबा।
घुसै चोर जज साब घरा मे, गिणती किसी गरीबा ॥ 15 ॥

मावै नही धरा मागणिया, दत किणा किण न देवा।
गिण गिण वगत निकाळा घर री, काई मुख सू केवा ॥ 16 ॥

मन्दिर रै ग्रोलै घण मोडा, भाभणिया मिल भोगै।
धर पावन ग्रा गुण्डागिरदी, ग्रासक माल ग्ररोगै ॥ 17 ॥

महल किया ग्रम्बर सू मिलता, ठाट वाट सब ठावा।
तसकरिया जीवण मे तेजी, लेवै ग्राणद लावा ॥ 18 ॥

पूजी सू बढवै नित पूजी, ग्ररथ हीणा ग्रमूझै।
धन माही धायोडी धून्दा, सद ना मारग सूझै ॥ 19 ॥

व्याप गयौ भारत धनिका सू, जोरा दालत जाड़ै।
समझै कठपुतळी सरकारा, मन ज्यू चाय मरोड़ै ॥ 20 ॥

दुरदसा आ भारत देस री, ध्यान न सासक धारै।
कुरसी री चिंता मे काला, आछी छोत उतारै ।। 21 ।।

समणी कठण देस री सत्ता, हर कोई लेवे हाथा।
रमै देस नै समझ रमतियो, माडचा घालै बाथा ।। 22 ।।

चाल्या देस चुनावो चरचा, भासण देव भीना।
समझ वायदा जनता सारी, देख वोट दे दीना ।। 23 ।।

कुरसी लै अे तो कोडाया, जनता था दिस जावै।
वगत नही सुणवा जन वाता, रै जन थानै रोवै ।। 24 ।।

अै सब अेक अेक सू आगै, भाजै स्वारथ भूडा।
दरसण कर कर इसा दोखिया, मिनख उतारै मूडा ।। 25 ।।

जनता समझ गई अब जोग, नेता स्वारथ न्हाळै।
लेवो चित्त चेतणा लोगा, गरब धनी री गाळै ।। 26 ।।

चेतहीण रहिया तो चितव, पावोला दुख पूरा।
सुणसी आपा री ना सासक, दुख ना करसी दूरा ।। 27 ।।

समझ लही भारत रा सासक, सुकविया सदेसो।
वकसा नही अबै ज वदल्या, रै तोडाला रेसो ।। 28 ।।

नेता - नीयत

गीत हुसावली

अवगुण रा उदधी गुणा रा आछा, करमा रा पोचा अनुकूळ।
नमसकार ! भारत रा नेता, मुलक तणी आरत रा मूळ ।। 1 ।।

यांधै गरज अरज रा बहरा, फळ रा नळ फरज रा फूड ।
पुन रा अरि पाप रा पालग, जाप नही थाप रा धूड ।। 2 ।।

जुलम रा जम कलम रा झूठा, मट रा मलम चलम रा सूर ।
मद रा पीवक पद रा मगता, नद रा जोव किरी थळ नूर ।। 3 ।।

सत रा कपण मत रा मादा, खोदा वित रा अरपण खंध ।
अनल रा लगण छल रा आदि, अचळ नाही अकल रा अंध ।। 4 ।।

गत चुनाव घर घर रा ग्राहक, देख लहा दर दर रा दीन ।
जीत रा वणी प्रीत रा जुगनु, हीत नीत रा खोटा हीन ।। 5 ।।

कमम अवर कुरसी रा काचा, वाचा रा झूठा छै नीर ।
अमल दारु ललना रा आसक, आसक इसा देस रा सीर ।। 6 ।।

चित गदा चदा रा चाहक, मदा करम दस रा माण ।
धन पर रा खावण रा धधा, हुवै जणा फन्दा रा हाण ।। 7 ।।

वळा रा वधण दळा रा वदळ, खाव गभख खळा रा खास ।
रसम जसम रा रोगलिया, दोगलिया तसकर रा दास ।। 8 ।।

पर रा माल गाल रा प्रेमी, ख्याल चाल रा वडा खराब ।
मूंडै भेट पेट रा मोटा, अंट खट रा झूठी आभ ।। 9 ।।

करियौ महल सहल रा कामी, गहल चहल रा नामी गाण ।
भारत आच खाच रा भेळ, पाच वरस रा सरम प्रमाण ।। 10 ।।

भख्ख लहै रिसवत रा भोड, अवर नहीं इच्छा रा ओड ।
लिछमण कहै देस रा लोगा, त्यारा देवौ नखरा तोड ।। 11 ।।

दारू - दूसण

कवित्त

अग न दिराय हाण मव ही नसा रा अस,
ग्ग कस सागैह विगाड देवै राजरौ।
माजनौ गमाय देवै मरजादा आघी मेल,
लागी लगन नहीं रहवै ध्यान लाजरौ ॥
सुर नर भूप सारा विगड़िया इणी सग,
किणी कयौ मामरम किणी दारू काजरौ।
मासण आसण पलटाय इतिहास साखी,
आखी बात चुभती कवि समाज आजरौ ॥ 1 ॥

राजी वेता सुरगा मे देव पीव मोमरस,
दारू विणी रौ नाव भूमडळ दिरायौ है।
सराव केवै पढिया लिखिया साकीन घणा,
मदिरा सवाय छाक लोक न मरायौ ह ॥
मयखाना गौ मदहोस रूप उरदू माय,
ड्रिंक वाइन नाव अ गरेजी ठायौ ह।
सू घ सू घ देखी मती नाव छै खराव मारा,
ऊ घ ऊ घ रूप आ नास करवा आयौ ह ॥ 2 ॥

मदिरा आणद अर खोसली जगत मोज,
चोज भगत दारू मधिरा नह चाव ह।
कर वै कमाई नरकाभ काभ आज केई,
सवन सराव माझ टाबरा सतावै ह ॥

श्रेय दारूखानी सारा भारत री खोमी ग्राभ,
नाभ नसाय दारू हाण घर लगावै है।
देखो देखो नाम उमू वेय रयो हिन्द देम,
जिद रिद रूप पेम ग्रातमा जळावै है ।। 3 ।।

जलमिया टावर खुमी करै दारू जुगाड,
राड करगाय ऊभा कर देवै मदन है।
मगाई विवाह माय सराब रहै मरीक,
लीव मगन वोदी लागी खोटी लगन है ।।
मरिया मिटाण मो दारू तणी मनवार,
ग्रार पार वेय रही वाळगा ग्रगन है।
सुधा वसुधा पर देखो माग्ने गरळ अस,
मस्यार ख्रोटा डसू भारत मदन है ।। 4 ।।

काचा मनगार वाळा काठी नाय मन वीध
मतवाळा वेय हाचा दारू महफिल मे।
चसकी नगाय लेवै धीरै धीरै यू चलाय,
दाय भराय जावै घणी दारूडी दिल मे ।।
थोडी थोडी उपरावै घरा ग्रावै मन चोक,
डरणसू ग्राछी चीज किसी सिस्टी ग्रखिल मे ।
नागमी लार जद छूटणो घणी दोरी लोकै,
वळ वुद्धि धन तन वडज्यामी [illegible] मे ।। 5 ।।

पोच वायरा वेयगा पी पी दारू ग्रळघोर,
भोर साफ ढालो नही मन [illegible] है।
नस मे समाय रहियो दारू [illegible]
वस मे सरीर नाय [illegible] है ।।
कूट-कूट टावरिया [illegible]
ग्रागी [illegible] है

हेमायती देख वो कामण पै उठावै हाथ,
जोतना माटी नै गेवै कामणी जमारै ।। 6 ।।

सूखियो सरीर सारो सेवन सदा सराव,
रावडो चादी गी दिन रात ही रुळावै है ।
मन नही लागै विन मदिरा मुलक माय,
पच आय ठेकै निज हालत भुलावै है ।।
खेती पाती सू ही मन लेवै अदवीच खीच,
पाच न्याति मे मन ज्याति नह पावै है ।
दोरी लागी नोकरी री सुद नै विसार देत,
मालत दारू मे मग चालत न मावै है ।। 7 ।।

उठताई दारू मगाण री करै अरदास,
पाई पाई कर भेळी ठेकै पे पुगावै है ।
आता ही बोतल खट खोलनै गिलास आप,
गळै उतार घूट अनेक गीत गावै है ।।
अेक घूट लेवताई मन मे उठी उमग,
अग अग धूजै तिको ठिकाणै आवै है ।
मारा काम करण री वणाय लेवै आप सूचि,
करणा अरणा नाय की दारू करावै है ।। 8 ।।

बोय बोय कर परी पी लीवी आधी बोतल,
फेंक दीवी चोक बीच बीछ नीच फेरू है ।
गाळिया काढ काढ घर रसै दियो गु जाय,
खाय वगाय रोटी पडियो घर खेरू है ।।
धिपडिया खातो थको छोडवै निवास धाम,
मान नाय कयो जिया असर व्हे मेरू है ।
वहतो वहतो इत पडगो गळी र बीच,
भाजनै मूतै मू डा माय वाहण भेरू है ।। 9 ।।

धरम करम नही मरम खोनियो धोर,
नीर वहाय कर देवै नरग नरम है।
रोवता न देख केइ धार लेवै मना राम,
फाण्ड ई बताऊ किता फूटिया करम है ॥
वाळक कूकवै भूखा भामणी बिमार भळै,
गायन गागरा करै जेवडी गरम है।
दोड्यो दोड्यो जाय देखो ठेकै पीवण दारू,
सतहीण गतहीण करै ना सरम है ॥ 10 ॥

घणी पी पी दारू केई पडिया खराब गेलै,
आगी पाछी चीज कर आदत उपाई है।
ओछा मिनखा कनै जायनै करै अरदास,
खोटी छोटी वात सुण खोपी माय खाई है ॥
अदहीणा होय इसा मेटदै जमारै ओज,
वीज धरती रो वण बात नै वधाई है।
इमी दारू सू भाया रहजो अळगा अवस,
देश्री मत केज्यो कोई दारू ही दवाई है ॥ 11 ॥

वळद छकडी अर वेच दियो गोर बाडी,
वाडी वाडी ओल परो गमावियो वळ है।
वेचन जमीन सारी विगाडै जमारै भेख,
आवाळी पीढी रै करै घाटी अचळ है ॥
सुनार घरा सह पूगियो वधु मिणगार,
बार तिवार अबै आस सह विफळ है।
टापरो वेचवा मारु मोच लीनो ओर टोटो,
मगाब यू पी पी करै जलम सफळ है ॥ 12 ॥

करन बोपार पेली कोरती वढाई कासा,
ढबा ढवा कराय दीनो सराबी ढाळो है।

नशिया बिग्न खोट पातर गिरत धार,
इज्जत न रय ऊ नी भर दोनो आगी है ।।
दिनोदिन गू जाग रियो सूनी दुकान,
नेताहीण वेय वेय लगारियो चाळो है ।
आमद रहवै नहीं धरा माय च्यार आना,
दारू पी पी माउ देवें दुकाना दिवाळी ह ।। 13 ।।

पामणा पईया नैं गाळियां में फर्ज पुकार,
मौत मगा सेण री नहीं राखवें मको है ।
मरजादा मेटी पण मादीजें अक्कल माय,
नोय नोय कर दियो वोवाडियो वको ह ।।
सरीर नेवस कियो पण वण ज्यावें सूर,
डर डर थाज रियो जीवण री ठको ह ।
देखलो हालत माया पीवजो मति थे दारू,
कारू नहीं केवोई और दारू ही वळ को है ।।14।।

अणूती दारू उग्या, अणूती बढावें ग्राम
मास खायनें विरती तामसी मचळगी ।
चोरी कर लेवै पण ध्यान नाय देवें चित,
वित्त किन सारी दारू ठेके माह बळगी ।।
बाध्या पडज्यावें इमा देखनें पराई बाम,
नाव गाव गाव नसाबाज ही निकळगी ।
जचिया अजब ओरू जुवारिया मे बेठें जाय,
पाय वीरी प्रीती वदनीती मे पिगळगी ।। 15 ।।

कीरत डाक्टर वढे पीवें ना करदे सराव,
सराव सू दूर रहवै छत्रिय साचो है ।
साहित्यकार साचो जिको ना पीव सराव,
अळगो इसू रहव अभियन्तो आछो है ।।

नोकर करमा सेठ अफसर मजूरिया,
हाला सू अळगा रहिया हिरदो हाचो ह ।
भूल ज्याया दारू पीणी मान्त वामिया भळे,
कीरत दारू री कथं जिको कवि काचो ह ॥ 16 ॥

वणिग जिग छोर पातर यिग्त धार,
इज्जत न रया ऊ नी मर दीनी माळी है ।।
दिनोदिन यू जाग रियो सूनी दुकान,
नेताहीण वेय वेय लगावियो चाळो है ।
आमद रहवै नही घरा माय प्यार मान,
दारू पी पी वाड देवै दुकाना दिवाली है ।। 13 ।।

पामणा पईया न गाळियां में करै पुकार,
मीत मगा सँग रो नही राखवै मयो है ।
मरजादा मेटी पण मोदीजै अवल माय,
वाय वोय कर दियो नोवाडियो वनो है ।।
सरीर नेपम वियो पण वण ज्यावै सूर,
डर डर वाज रियो जीवण गो ठवो है ।
देखलो हालत भाया पीवजो मति थे दारु,
यारू नही रेकोर्ड और दारू ही वळ को है ।।14।।

अणूती दारू उग्या, अणूती बढावै आम
मास खायने विरती तामसी मचळगी ।
चोरी कर लेवै पण ध्यान नाय देवै चित,
वित्त भ्रित सारी दारु ठेकै माह वळगी ।।
वाथ्या पडज्यावै रमा देखनै पराई वाम,
नाव गाव गाव नसावाज ही निकळगी ।
जन्निया अजव ओरू जुवारिया मे बेठै जाय,
पाय चोरी प्रीती वदनीती मे पिगळगी ।। 15 ।।

चीरत डाक्टर बढै पीवै ना कदै सराव,
सगव सू दूर रहव छनिय माचो है ।
माहित्यकार साचो जिको ना पीवै सराव,
अळगो इमू रहव अभियन्ती आछो है ।।

नोकर करमा सठ अफसर मजूरिया,
हाला सू अळगा रहिया हिरदो हाचो ह ।
भूल ज्यावा दारु पीणो भारत वासिया भळै,
कीरत दारु री कथै जिको कवि काचो ह ।। 16 ।।

आजादी रौ गीत

सोहणो

चिड़िया सोनै तणी जग चावी, भावी दसा भारत बणै ।
ठाडी व्ही ठीमर गत ठावी, हावी दसा गुलाम हुणै ।। 1 ।।

फिरंग जाळ जबर फेलायौ, कायौ भारत सग कियौ ।
चायौ मन ज्यूं हुकम चलायौ, दगौ देस न अवल दियौ ।। 2 ।।

जबरी राणी लिछमी झू झी, खासा वाणी तेज करी ।
हाणी हरण देस री हाची, खाची अस्व लगाम खरी ।। 3 ।।

कड़क त्यारया टोपै कोपिया, सामी पग रोपिया सिरै ।
व्याकुळ हुवा फिरंगी बेळा, मेळा भेळा माय मरै ।। 4 ।।

जयचद घणा देस जलमिया, गमिया फोड र बात घरै ।
चेती थकी बुझी चिणगारी, धारी बदी फिरंग धरै ।। 5 ।।

सजग हुयगा समाज सुधारक, केई पारख देस करी ।
दयानन्द सुरसती देस रै, भली भावना माय भरी ।। 6 ।।

राम मोहन राय सो राजा, गाजा बाजा देस घुरै ।
विवेकानन्द विस्व विचाळै, जबरौ हिन्दू धरम भुरै ।। 7 ।।

घणकर सोच म्हात्मा गांधी, लाली मोती अवर लही ।
जमना लाल बजाज जागियौ, केया खारी बात कही ।। 8 ।।

राय लाला लाजपत रळियौ, आजादी रौ जग अपै ।
तिलक पाण आजादी ताई, खासौ तन मन हूत खपै ।। 9 ।।

जवाहर करी आपै जागा, रास विहारी अवर रळै ।
सुभासचन्द्र बोस सो साथी, मुलका दोरो घणो मिळै ॥ 10 ॥

भगत सिंघ धिन प्राण वारिया, सेखर चन्दर घणो सजै ।
करदी तन मन धन कुरवाणी, बाजा आरा अमर बजै ॥ 11 ॥

चेलो हुवो राजेन्द्र बाबू, राधाकिसन तन मन रमै ।
लगनी लगी आजादी लेवण, ठावा ठीमर नाय ठमै ॥ 12 ॥

मारगीवाण थेट री आखा, राजस्थानी धरा रही ।
जोगा मिनख सटके जागिया, किवर हुयनै बात कही ॥ 13 ॥

बारठ कुटम्ब हुयगो बागी, जागो केसरि सिंघ जठै ।
सुतन प्रताप देस री सेवा, डिगियो नी लै मोत डटै ॥ 14 ॥

खरवा गोपाल सिंघ खारो, लारो फिरग घणो लियो ।
देस हिन्द आजादी देवण, तन मन धन कुरबाण कियो ॥ 15 ॥

जेळा जाय काकरा जोया, भोगी तिस अर भूख भळै ।
सहिया दुख सेवग इण सारू, फोजी भोगी देस फळै ॥ 16 ॥

उगाड छाती आया आगै, सीना ऊपर तोप सही ।
पाण इसा आजादी पाई, रै इतियासा बात रही ॥ 17 ॥

टोटो घर रोवै टाबरिया, फाट्या बसतर फेर फिरै ।
बापू हुवो देस हित बागी, घर दिस पाळो नाय धिरै ॥ 18 ॥

लगण करै घणा लाडणिया, परणी भूखी फिरै पगा ।
देस प्रेम सार तज दीना, जोरू टाबर सेग जगा ॥ 19 ॥

गोरा भूखी भस्या गाया, हूं नी चारो धरा हरो ।
सिर देवण भारत रै सारु, खामद भुरै धरा खरो ॥ 20 ॥

परणी वाट जाय प्रीतम री, तिवारा सिरणगार तणी ।
कर मदी रनियोडी कामण, विरहण सावण तीज वणी ॥ 21 ॥

जाए धणी झरोया झाक, वाटा आसू नेण भरै ।
देस हिन्द आजादी देवण, वत फिरगी राड कर ॥ 22 ॥

होळी रगन रमै हताळू, गिणगारा व्ही जेळ घर ।
सावण तीज फिरगी माग, यतो मरण सिवार वरै ॥ 23 ॥

राखी न यारी नी राखी, रिच्छा वहना करण रमै ।
नेक चुकाय फिरगी नाखै, जारा भारत नाव जमै ॥ 24 ॥

हिडोळ दिन फासिया हिंडै, हरख हरख लै मौत हमैं ।
झूलै मोत जळासम जोगा, ठावा चाकर नाय ठमैं ॥ 25 ॥

गोगा न जेळा मे गेळै, चेळ भारत चाम चढ ।
मेवा यावणिया दुख सहवै, मेवै खीरा सून मढै ॥ 26 ॥

तडफ तडफ आजादी ताइ, खुरडा खोतर हुवै खपा ।
सराद वनागत धरा सूना, वतन निभावण धणी वफा ॥ 27 ॥

चडी दुरगा वाळा चेला, खेला वागी कर खरा ।
जोत करै आजादी जीतण, धूज पाप फिरग धरा ॥ 28 ॥

आजादी चावणिया आखा, सामी फौज फिरग सज ।
रावण जिसो फिरगी राजा, वाजा धण अन्याय वजै ॥ 29 ॥

रावण फिरग गणोइ रूस, चू सै भारत रगत चुळै ।
कोप रैयत आज सिर काटण, फिरगी सिर लेवण फुळै ॥ 30 ॥

दीपमालिका तमस दीसै, वागी भारत जीव वळै ।
अधियारो मेटवा आया, त्यानै घणा फिरग तळै ॥ 31 ॥

लिछमी अठू फिरगी लेव, माल खाल ल करै मजा ।
करण करण रा आपा नै करिया, सदिया ताई सही सजा ॥ 32 ॥

मकराता दिल अपणो सोजै, छीजै भारत तणी छिता ।
पतग फिरग वाळी पूरी, काटण वागी हुवा किता ।। 33 ।।

मरगा केई सरदी मरता, साधन हीणा घणा सका ।
आजादी रै खातर आपा, घर घर खाया घणा धका ।। 34 ।।

बाळक हा सरदी सू व्याकुळ, डेण डोकरी घणा डरै ।
जोधो दर दर आज जुगत सू, फतै फिरगी करण फिरै ।। 35 ।।

मरगा केई सरदी माही, ओढण नै नी मिलै अठै ।
कुमळाई भारत री काया, जीव फिरगी मुळक जठै ।। 36 ।।

बसत हुयगी पतझड वेसी, वाग वगीचा सून वसै ।
मोळी रोळी भारत माता, हूसा माय फिरग हसै ।। 37 ।।

ग्रीखम तपती बळती गहरी, काया ऊपर घाव करै ।
लवण सम राळ फिरगी लछण, घुटघुट मरगा मिनख घरै ।। 38 ।।

तप सूरज अन्याय फिरगी, साथै दोनू कैम सहै ।
लूवा वैया तन लै लीना, देह्वा कम्ट फिरग दहै ।। 39 ।।

वरसाळै साल दुख वेजा, नेजा करी फिरग नखै ।
सूळा री वाग्या हित मेजा, हेजा नित आजाद हकै ।। 40 ।।

पडी रही थाळया पुरस्योडी, उभडी कैया माग अठै ।
जोनी बाटा रहगी जोरू, वालम पूगा नाय वठै ।। 41 ।।

बोबावै मा वापू वैठा, लाडेसर गळ मोत लही ।
आजादी रै खातर आपा, सदिया ताई तुमत सही ।। 42 ।।

वाळविया कुरळावै वैठा, वापू फासी खाण वठै ।
छाती रै चेपणिया छेटा, पोमाळा मे कवण पढै ।। 43 ।।

गुरु महिमा गरिमा है गारत, ग्रारत भारत ग्राज दसो ।
मास्टर छोड दई मरजादा, करियो ग्राछो काम किसो ।। 55 ।।

नेकी हीरण हुवा घरण नोकर, वेगा रोकड हेत बिकै ।
कामचोर दामा मे कोरा, टेम दफतरा नाय टिकै ।। 56 ।।

ग्रधिकारी मरकारी ग्राखा, भूलै नेकी हीरण जगा ।
ग्रपण स्वारथ खातर इसडा, ग्राग लगावै देस पगा ।। 57 ।।

ग्राळस मोट्यारा तन ग्रायो, कडका मेनत नाय करै ।
करजै कादा माय कळीजै, भीतर खोटा भाव भरै ।। 58 ।।

चावी व्ही विद्युत री चोरी, ग्राछा निकळै राम ग्रटै ।
भाडी रेल मोटर न भागै, राम निकळिया राम रटै ।। 59 ।।

वतन सम्पति घणी विनासै, मोको लाग्या घरै मिलै ।
घर री सोच कराव गरजी, गेलै स्वारथ देस गलै ।। 60 ।।

ग्राई इरण खातर ग्राजादी, हिलमिल सवै विकास करै ।
स्वाम जिया ग्रवै लडै स्वारथी, दड सहिता नाय डरै ।। 61 ।।

कर वोपारी चोरी कर री, वोळी मू गी चीज विकै ।
लूट मची बाजारा लेखै, सोरा ग्रारा रोट सिकै ।। 62 ।।

माकड तोड दिया महगाई, धाकड छाई हिन्द धरा ।
ताकड मे वैठा कम तोलै, ग्राकड हुयगा वरिणक हरा ।। 63 ।।

महल इरणा वरणीजै मू गा, कू गा कू गा पहल करै ।
गरज मिटै वरण ज्यावै गू गा, सूमा नोकर लेरण सरै ।। 64 ।।

भेळ करै चीजा घरण भू डो, रोग वदावै घरणो रसा ।
रोकड रै पारणा चुप राखै, कर सरकारी कसम कसा ।। 65 ।।

सुद चीज मिलरणी दोरी रसै, सबर करावै हिन्द सबै ।
भाग पडी कूवै ग्रव भाया, दिन दिन दूरणी देस दवै ।। 66 ।।

छपनौ छिनवौ दुरभख छाया, काया मरगी भूख किता ।
चित फिरगी नाही चित मे, हाणी करदी हिन्द हिता ॥ 44 ॥

महमारी चौतरै माही, मरगा क्रोड़ू मिनख मही ।
सोच कीकर फिरगी सूझै, दिल पर सीला मेल दही ॥ 45 ॥

गरिमावान महात्मा गाधी, क्रोड़ू माथा नमन करै ।
सजै प्रेरणा जीवण मादौ, डाडी मारग नाय डर ॥ 46 ॥

ओछी धोती छवर अगरखी, पावडिया पग फिरै पगा ।
खपियौ आजादी रै खातर, जद हिन्द क्रोडा पाय जगा ॥ 47 ॥

लेखक कवि लिखिया मद लेखण, साहित रचियौ घणौ सिरै ।
आजादी रै खातर इसडा, फिरग भगाण धरा फिरै ॥ 48 ॥

पच पच मरिया सूरा पूरा, जद आजादी हाथ लगी ।
जारो जस भूल्यौ नी जासी, जोत अमर वा नाव जगी ॥ 49 ॥

दोरी मिली इसी आजादी, गेली जनता भूल गई ।
फरज धरम नै भूल्या फेरू, देस छोड मरजाद दई ॥ 50 ॥

भाई भाई लडै लडाई, सप्रदाय री ओठ सजै ।
पावन थळ कर दिया अपावन, वाज अेकता तणा बजै ॥ 51 ॥

आ आई किसडी आजादी, मिनखा हाथा मिनख मरै ।
देस प्रेम नाही है दिल मे, थळह छेत्र अर जात कर ॥ 52 ॥

नेता अभिनेता री नीती, धन कमावण हुई धरा ।
साहित्यकार फरज न सूझै, खूट गया है मिनख खरा ॥ 53 ॥

अनुसासण होणा है वाजब, पोसाळा मे नाव पढै ।
देस उपद्रव मे कर दीसै, नेता होणै मच चढै ॥ 54 ॥

गुरु महिमा गरिमा है गारत, आरत भारत आज इसौ ।
मास्टर छोड दई मरजादा, करियो आछो काम किसौ ।। 55 ।।

नेकी हीण हुवा घण नोकर, वेगा रोकड हेत विकै ।
कामचोर दामा मे कोरा, टेम दफनरा नाय टिकै ।। 56 ।।

अधिकारी भरवारी आखा, भूलै नेकी हीण जगा ।
अपण स्वारथ खातर इसडा, आग लगावै देम पगा ।। 57 ।।

आळस मोट्यारा तन आयौ, फडका मेनत नाय करै ।
करजै कादा माय कळीजै, भीतर खोटा भाव भरै ।। 58 ।।

चावी व्ही विद्युत री चोरी, आछा निवळै राम अठै ।
भाडी रेल मोटर न भागै, राम निकळिया राम रटै ।। 59 ।।

वतन सम्पति घणी विनासै, मोको लाग्या घरै मिलै ।
घर री मोच करावै गरजी, गेलै स्वारथ देस गलै ।। 60 ।।

आई इण खातर आजादी, हिलमिल सबै विकास करै ।
स्वान जिया अबै लडै स्वारथी, दड सहिता नाय डरै ।। 61 ।।

कर वोपारी चोरी कर री, धोळी मूगी चीज विकै ।
लूट मची बाजारा लेखै, सोरा आरा रोट सिकै ।। 62 ।।

माकड तोड दिया महगाई, धाकड छाई हिन्द धरा ।
ताकड मे बैठा कम तोलै, आकड हुयगा वणिक हरा ।। 63 ।।

महल इणा वणीजै मूगा, कूगा कूगा पहल करै ।
गरज मिटै वण ज्यावै गूगा, सूमा नोकर लेण सरै ।। 64 ।।

भेळ करै चीजा घण भूडी, रोग वदावै घणो रसा ।
रोकड रै पाणा चुप राखै, कर सरकारी कसम कसा ।। 65 ।।

सुद चीज मिलणी दोरी स्सै, सवर करावै हिन्द सबै ।
भाग पडी कूवै अव भाया, दिन दिन दूणो देस दबै ।। 66 ।।

नकली दवाई वर्णे नितरी, गिटिया रोगी गम घरै ।
अेक नी उदाहरण ग्रनेकू, डाक्टर देता थका डरै ।। 67 ।।

दारू मे जनता दपटीजे, मीजै मगाव माय भळै ।
मद छकिया विगडै मतवाळा, करै वाटन पिया वळै ।। 68 ।।

गाजा भागा मुलफा गेळै, चरम हरोइन चाव चढै ।
काळो खा खा हुयगा काळा, देखो ग्रागै देस वढै ।। 69 ।।

टीका दहेज लेवण टक्कर, पूरो मिनखा जोर पडै ।
वहुग्रा नैट्या यू वळजावै, खोटै मारग देस खडै ।। 70 ।।

ग्रा लखणा मू ग्रा ग्राजादी, घणा दिना री नाय गिणो ।
मरज्यासी वेमोन मानखो, चुकता फिरस्यो चिणोचिणो ।। 71 ।।

लाज तिरगा री मत लेवो, गाधी सुरगा माय घुटै ।
देख्या जिमडा हाल दाखिया, ग्राजादी रा सुकव ग्रठै ।। 72 ।।

कळजुग री गीत

गीत सुव सासोर

कळुकाळ विकराळ छाविया धरा करारी,
हाथ न हाथ खा रया छै हाय ।
वात मव न्याव री माय री वीगडी,
लागी सगळै वदनीत री लाय ॥ 1 ॥

भजन सुद भाव न भूलगा भायला,
जाणन गूथवै पाप रा जाळ ।
दान पुन करण हित हुवा जम दूमना,
पेट भरण करै खोटा पपाळ ॥ 2 ॥

मुख ऊपर मीठा खोटा मन माही,
फरक कथनी करणी मोटो फर ।
ईसकै आग रै बळै छै अणूता,
आमणा सासणा माय अधर ॥ 3 ॥

माईत दुख वाळक पढाई माडा,
सिनेमा टीवी हन्दा साकीन ।
आचार विचार खोटा डमी ऊमर,
हुपगा मोट्यार पुरसारथ हीन ॥ 4 ॥

आळस तन ऊपरा हियै अमूझना,
झूझना करज रै वढत जार ।
आघी पाछी वाता करण नै आथडै,
अडै लडै मारग झूठ रै आर ॥ 5 ॥

नसा मे चूर घणा अजादा नासै,
लाज नार लेवै लफगा लूट ।
सुणै नही जन दरद आज रा सासक,
चावा सम वासक नाग चौखूट ॥ 6 ॥

टीकै दहेज वेच रिया टावरिया,
वे बिन धन देवै बिनणिया बाळ ।
घुळ रयो घणो जहर इसो घर घर मे,
कुमत आ छाई मिनखा कळुकाळ ॥ 7 ॥

सत विहूण हुई नारी सतवती,
गै उछती फिरै भटकती आज ।
सुख री सगी चगी अगी स्वारथ,
भीड पड्या कत छोडवै भाज ॥ 8 ॥

फजीती करण देस अणूतो फेरयो,
रिसवत अर भिसटाचार रो रोग ।
देस प्रम रासट्रियता नही दिल मे,
जुडै स्वारथ जना देस रो जोग ॥ 9 ॥

जळ अर हवा दुसित हुयगी हर जागा,
आदमी हुवो मसीना आधीन ।
दिन दिन आ गत अधिक बिगडती दीखै,
कळुकाळ कथ कवियो लिछमण कोन ॥ 10 ॥

प्रलाप - पच्चीसी

सवया

नेहजगारीय रोग बद्यो भलहीण दमा अर जोग विचारी ।
ओखद जोवत हार गयो अब ओर नही बिन स्याम हमारी ।।
वेद वणो मय खेद मिटावण संकट मेटण देव सहारी ।
बारमवार पुकारन्त आरत गारत जीवन होत निहारी ।। 1 ।।

जोय लही प्रभु जाय दसू दिस पाय लही वदनामीय पूरी ।
ठोकर खाय लही हर मारग माग भला सू भई इम दूरी ।।
मेर करो मुरलीधर माधव बात रखो मत नाथ अधूरी ।
फाड गळो फरियाद करू कुण आद बिसम्भर पात लछूरी ।। 2 ।।

छोड दई अब आस सबै अर सिंधु निरास मे दास समायो ।
तेर सकै न जिको तन दूबळो ओर हथा बळ मोच गमायो ।।
धु धळापण छावत नेण धकै दुखी मारग जीवण मेवग आयो ।
हे ! अजचद मिटा दुख फदण नातर नाम मयू खामद पायो ।। 3 ।।

भूल गयो सद पथ भळै नही तत धिया मझ सोचण ताई ।
नाम तिहारो मुखा नह आवत याद हियो अब तो बिसराई ।।
गोर हुवै किम भूल गयो सुद हीण दसा मम ऊपर छाई ।
फालतू गोनाय खात फिरु अजहू मद ठोड नही कव पाई ।। 4 ।।

गोल मकू रुजगार बिना नह मोल घटै कमाई बिन म्हारो ।
छोल दियो हिरदो मझ छोजण खोल दियो पट लोक लज्जारो ।।
कोल मिटै मम जो करिया रखिया दुख डोल रयो मुद भारो ।
पोल भई किम मो परती धरती पति बीरद कोल निहारो ।। 5 ।।

नसा मे चूर घणा अजादा नासै,
लाज नार लेवै लफगा लूट ।
सुणै नही जन दरद आज रा सासक,
चावा सम वासक नाग चौखूट ॥ 6 ॥

टीकै दहेज वेच रिया टावरिया,
वे बिन धन देवैं बिनणिया वाळ ।
घुळ रयौ घणौ जहर इसौ घर घर मे,
कुमत आ छाई मिनखा कळुकाळ ॥ 7 ॥

सत विहूण हुई नारी सतवती,
अै उछती फिरै भटकती आज ।
सुख री सगी चगी अगी स्वारथ,
भीड पड्या कत छोडवै भाज ॥ 8 ॥

फजीती करण देस अणूती फेरयौ,
रिसवत अर भिसटाचार रौ रोग ।
देस प्रेम रासट्रियता नही दिल मे,
जुडै स्वारथ जना देस रौ जोग ॥ 9 ॥

जळ अर हवा दुसित हुयगी हर जागा,
आदमी हुवौ मसीना आधीन ।
दिन दिन आ गत अधिक बिगडती दीखै,
कळुकाळ कथ कवियो लिछमण कीन ॥ 10 ॥

प्रलाप - पच्चीसी

सवया

रुजगारीय रोग बद्यो भलहीण दमा अर जोग विचारौ ।
ओखद जोवत हार गयो अब ओर नहीं बिन स्याम हमारौ ।।
बेद बणौ मय खेद मिटावण संकट मेटण देव सहारौ ।
बारमवार पुकारत आरत गारत जीवन होत निहारौ ।। 1 ।।

जोय लही प्रभु जाय दसू दिस पाय लही बदनामीय पूरी ।
ठोकर खाय लही हर मारग भाग भला सू भई इम दूरी ।।
मेर करौ मुरलीधर माधव बात रखो मत नाथ अधूरी ।
फाड गळौ फरियाद करू कुण आद विसभर पात लछूरी ।। 2 ।।

छोड दई अब आस सबै अर सिंधु निराम मे दास समायौ ।
तेर सकै न जिको तन दूबळौ ओर हथा बळ सोच गमायौ ।।
धु धळापण छावत नेण धकै दुखी मारग जीवण सेवग आयौ ।
हे ! ब्रजचद मिटा दुख फदण नातर नाम क्यू खामद पायौ ।। 3 ।।

भूल गयो सद पथ भळै नही तत धिया मझ सोचण ताई ।
नाम तिहारौ मुखा नह आवत याद हियो अब तौ विसराई ।।
गोर हुवै किम भूल गयो सुद हीण दसा मम ऊपर छाई ।
कालतू गोताय खात फिरू अजहू सद ठोड नही कब पाई ।। 4 ।।

तोल सकू रुजगार बिना नह मोल घटै कमाई बिन म्हारौ ।
छोल दियौ हिरदौ मझ छीजण खोल दियौ पट लोक लज्जारौ ।।
कोल मिटै मम जो करिया रखिया दुख डोल रयो मुद भारौ ।
पोल भई किम मो परती धरती पति बीरद कोल निहारौ ।। 5 ।।

सात दियो विसराय सबै अर न्यात करै नह आदर म्हारो।
पात पणो बद लोग पुकारत ओर कहे कज के निकमा रो ।।
ठोड नही हिरदै मम खातर आज कमाई बिना नह प्यारो ।
दोस किनै नह ओर दहू अब अेक दोमी तकदीर हमारो ।। 6 ।।

आ धारि रुजगार बिना मन तीज तिवार घर नह जाऊ ।
पेट हितू पर द्वार पड्यो अब स्याम निहार घणो सरमाऊ ।।
खीज करी रुजगारीय खातर पार पडी नह हू पछताऊ ।
बात बणी विखमी इण वार वणी मुरली वर हू कित धाऊ ।। 7 ।।

ओइ ससार असार कहे सत्र सार सब हरि नाम निहारो ।
कूमन ही अपराव करावत पेट तणो प्रभु पापहि न्यारो ।।
दौलत सू मत मोह करो इम सत कियो हरि नाम चितारो ।
पार पड़ै रजगार बिना नह पेट भयो प्रभु अछ्छन गारो ।। 8 ।।

अेक हूतो रमतो हरि मे मन सत रिखी हुय लेत समाधी ।
भेख लिया तिरथा कर भ्रमण दावता दादू दयाल की गादी ।।
अेक नही पपाळ घणा अब है घर वार अपार विवादी ।
बोझ बढ्यो पारिवारिक ऊपर हू रजगार बिना अपराधी ।। 9 ।।

मात पितामह लेय गया मन आप करी नह पूरण आसा ।
आज उणी रुजगार बिना फिर फार हुई मन माय निरासा ।।
केतिक वार करू विनती कितरा दिन ओर रखू विसवासा ।
बारम वार कहू अब गोविन्द तू जब आव मिटावण तासा ।। 10 ।।

पात दुखी घर वार दुखी रजगार बिना मो दुखी समवधी ।
चिंत लगी प्रभु मोय सुता चित ना रुजगारीय बात असधी ।।
टाय लहो अब क्यू सबको अवखो नह ओर ई हालत हदी ।
भेट अबै रजगार भलो अर मेट दसा तकदीर की मदी ।। 11 ।।

सास घुटै रुजगार बिना प्रभु नीद नही नित रात कू आवै ।
कोसीस कीधा न काम सरै तक्दीर दसा दिन रेन सतावै ।।
आ विधना नह चाय भली घर पात मना इम चिंत उपावै ।
मो कछु हाथ नही मुरलीधर आप विना कुण लाज रखावै ।। 12 ।।

सज नही घर बार चलावण भज मिटावण आ भवजामी ।
कोण सुणै हमरी जब तो बिन गोर करी अबतो घणनामी ।।
कैतिक वार कहृ दिल की मम खोज हू नाय अबै नह खामी ।
तू मम अंतर की नह जाणत काहे कहावत अन्तरजामी ।। 13 ।।

जाय नहीं मन ओर कू जाचण बात करो हमरी प्रभु कानै ।
हेक पखो नह काम हुवै अरदास धणी ह करी अवरानै ।।
देर करी अतरी किम कारण हारण लाग रयो मन छानै ।
तेज करी तक्दीर दयानिधि मीर करो सरकार खजानै ।। 14 ।।

हू हकनाख पठयो रद होवण थाब गयो अब चालत पाळो ।
पावन भाग अलाग टळ्या पण तू किम गोविन्द लेवत टाळो ।।
हू आय पडयो तव पेर बिचै भगवत अबै पग मामीय भाळो ।
ओर सबै बदळै फिरिया दिन ना बदळै हिव बसि बाळो ।। 15 ।।

अेक समै तिस के वस दतक सागर रो जळ पीवण आयो ।
पेखत ग्राह करी पग पक्कड जक्कड नै जळ माय समायो ।।
सूंड सरोज किया विनती जब दोड बिनै हरी आप बचायो ।
'लक्ष्मण' बेर बणी किम देर अबै कुण रावळी पथ रुवायो ।। 16 ।।

होय निछावर मीत सुदामा कू न्याल कियो सुख देय घणेरो ।
राज दियो दव लोकन को अर थाट सुदामा पुरीय सुनेरो ।।
नाय पुरी चहीजै मुझकू अर ना चहीजै घर कंचन केरो ।
दै अतरो रुजगार दामोदर जासु चलै घर काज अछेरो ।। 17 ।।

बात रखी निज सेवग की गिरता गिरी सू प्रहलाद बचायौ ।
लोह तपी तिकी लाट कै ऊपर देखत कीडीयनाळ चलायौ ।।
ना बळियौ अगनी मझ सेवग तू थम्ब फाडकै बाहर आयौ ।
ना करियौ मम कारज केसव मामूली काज हितु कहवायौ ।। 18 ।।

बात रखी सुगरीव तणी तद मार नियौ हरि राघव बालो ।
राज बिभीखण कू हरि देयन रावण री छळउद्यम न चाली ।।
चित करो हमरी चित चोग्ग बीत रही जिंदगानीय ठाली ।
सोच भयौ हिरदै पुरसोतम जाय परी फरियाद न खाली ।। 19 ।।

कस्ट निवारण भारत भूमिय आप अनेक औतार उपावै ।
जाय तरा बिच फा उखळी दव पेड न को मुगती दिलवावै ।।
दूझन तौ लख पच गऊ घर आणद गेह धीणा मझ आवै ।
आलय मे रुजगार बिना गऊ सेवग रै नह अेक दुझावै ।। 20 ।।

इन्दर कोप कियौ व्रज ऊपर नीर अपार घना बरसायौ ।
डूबण लाग रयौ व्रज गोरव भौ तव मे जव सकट छायौ ।।
धार लियौ गिरि आगळ पे तद इन्दर रौ अभिमान मिटायौ ।
छत्र की छाह के हेठ लहो नद किस्मत मो पर कोप करायौ ।। 21 ।।

बाण लग्यौ लघु भ्रात लछुकै जदै जव तू हडुमान दुडावै ।
जाय सजीवण लेण हडु जव आय लखन के प्राण बचावै ।।
हू कळजुगी लछमण हू मनै बेरजगारीय पीड सतावै ।
भेज कोइ हडुमान जिसो मम सकट कस्ट जो आय मिटावै ।। 22 ।।

सेवग तौ नरसी विसवान पे भात भराण सदेस भिजायौ ।
सावळ सेठ को रुप किया हरि छप्पन क्रोड को मायरो लायौ ।।
बात रखी नरसी सद दास की गोविन्द बीरद कोल निवायौ ।
हू नव दास रयौ अब भूकत भूख हरी न मिटावण आयौ ।। 23 ।।

सूर मीरा करमा रसखान की टेर सुणी पल माय तू आतो ।
ईसर सरुप मधु नरहर के आणद ग्यान हिये उपजातो ।।
वूत वणो नर देह अलु हित दास खामद निवावण तातो ।
हू अलु दास को वसज हू लछु रै क्यू आवत होवत तातो ।। 24 ।।

दे रुजगार इसो मन मोहन जासु रहै घर आणद भारी ।
आदर व्है घर आविया को सद नाय जाऊ कछु लेण उधारी ।।
मो कुळ री मरजाद निबै लगु नाय किणी नै हू प्रभु खारी ।
भाव मिलै भगती मन भावन पावन रुप रहै कविता री ।। 25 ।।

सीख - सवैया

सवया

बाळक आज पढो सुधरो अनुगामन होण न बात विचारो ।
टीवी सिनेमा हितु दिल टूटत पाय भुसगत ना परवारो ।।
नाम करो धन नाय नमा हित देह करो मत रोगज द्वारो ।
मात पिता नित मारत है मन नग हुवै रख ध्यान तिहारो ।। 1 ।।

अतन सू करणो गर आदर बोलत मादर ध्यान वडारो ।
मात पिता हित मान रखो मन ध्यान रखो कुळ री गरिमा रो ।।
सयम राख पढो हित साहित धीरज मकट म नित धारो ।
आळस छाय नही तन ऊपर लो पुरसारथ मारग प्यारो ।। 2 ।।

आरत बात किया मुख आवत भारत करणधार कहीजो ।
गारत जीवण नाय करो गत हारत क्यू पथ हिम्मत लीजो ।।
राग रखो करणी मद त्यागत भाग तणै विसवास न छीजो ।
भारत भार तिहार भुजा पर देस मनेव हियै रख रीझो ।। 3 ।।

नाव करो प्रतियोगिता नागर ओर उजागर खेल उपावो ।
सागर सेव तणे नित मापड ईस तणा हिवडै गुण गावो ।।
साफ सफाई रखो तन ऊपर भीतर थी मन सुद्द रखावो ।
खावण खातर नाय डुळो नित राख खुसी चित भोजन पावो ।। 4 ।।

वीर प्रताप सिवा दुरगा बळ पाय तिकै हित प्रेरणा पावो ।
भीसम जेम रखो दृढ निस्चय जेम भागीरथ जत्न करावो ।।
होय असोक तजो मन हिंसक गाधी तण सद पाथ धुरावो ।
त्याग रखो दधीची जिम तारण मारण दुस्ट मती घबरावो ।। 5 ।।

होय गयी हुसियार कमावण भाव अनीत गै नाय भराणो ।
काज निहार निहारत कारण जोव मे आय ना काम कराणो ।।
आस रखो विसवास रखो डर पाय दुखा मन नाय मराणो ।
नेक इमान रखो नित नीयत रै गरिमामय होत घराणो ।। 6 ।।

नोकर हो रखणी सद नीयत लोभ तणै चित ना ललचाणो ।
भ्रस्ट तणो पथ त्याग दहो भच काम समै मसती किम छाणो ।।
काम करो मन सू खुस होयर फालतु गोताय नाय खवाणो ।
जीवन च्यार दिना लग जोवन होय नसै धन नाय नसाणो ।। 7 ।।

सेठ सती कम तोल तू ताकड़ी हा सिर रामकू राख हमेसा ।
दोगल मार किया जन भारत लाज करै नह तू लवलेसा ।।
देस दुखी करतूत तो कारण दोलत नाव कमाय विदेसा ।
दोलत सेग धरी रह जावसी काळ चपेट कुमावत कैसा ।। 8 ।।

भारत रो कर नाव उजागर मेनत री फळसी ज मजूरी ।
वाजब दाम मिलै तन मेनत है पुरसारथ नाय हजूरी ।।
मस्त रहो जितरो मिल जावत पूर सकै कुण आसम पूरी ।
राखण जोग हमेस रखावत माल हराम तणै दिस दूरी ।। 9 ।।

त्याग सतोख पखो जन धीरप नेक इमान रखो मन नेता ।
लोभ तणै वस हो पद लोलुप काम विगाडण भारत केता ।।
झूठ बको मत भासण चाटण तो कथनी करणी घण छेता ।
काज रुखाळण पाय लियो जद लागिया धीकर खावण खेता ।। 10 ।।

देस सनेन रखो दिल भीतर सम्पति देस तणी मत लूटो ।
काज खळा जिम केम करावत आज किया मिनखा तन खूटो ।।
ओर तणो हक मार इळा पर भोग रया धन होय अपूठो ।
टेक्स तणी करणी न चोरिया तोडण सीव किया मत तूठो ।। 11 ।।

मात सुता बहना जिम मानरा जोग है बात सुनार पराई ।
रामुख होय मती नग्न वामरा आन कुळा इरारं वज पाई ॥
ओर तरौ लज लूटरा आगठ आपरौ मा वचसी बिम भाई ।
नग्न मरूप मती निरखी तिय रूप निरागरा वाज सदाई ॥ 12 ॥

आचार विचार रखो सुद आगरा नार रखो नित लाज सुनेरा ।
प्रीतम सू रख नेह निस्वारथ बोल मती वदनीतिय वेरा ॥
सील सतोख तरौ गहरौवपु दोनत ओर नही चित देरा ।
लाज गया तिहारी घर लाजत रै गित्तरा दिन जोवन रेरा ॥ 13 ॥

वृद्धपरौ हिवराम वसावियै दाम मे लालसा नाय दिराणी ।
हो पुजनीर रहो हित हाजर सीख बुरी किस कू न सिखाणी ॥
जीव रखो वस मे जग जीवरा काम भला कर राख निसाणी ।
काळ अवै सिर ऊपर घूमत झूमत तू सुख स्वाद अजाणी ॥ 14 ॥

श्री लक्ष्मणदान कविया राजस्थानी भासा रा आजरा चोखा कवि है अर यारी पोथी 'पावासर' पढिया सू तो ऐडो लागै जाणै छन्दबध कविता म नुवी भावनाम्रा आपरा उत्कृष्ट रूप लेय राचीजो है। यारी एक पोथी पेली ई 'सदेसो' घणी सुन्दर विचारा री प्रतिपादक रैई। जे राजस्थानी भासा मे नुवी पीढी रा रचनाकार इण भात काव्य रचना करता रैया तो राजस्थानी भासा रो उत्थान व्हेला अर भासा ने मानता मिलण मे सहयोग मिलेला। म्हारी कामना है के श्री लक्ष्मणदान कविया इणी भात नित नुवी रचनाम्रा लिखता रैवै जिणसू भासा न बल मिलेला।

रेवतदान चारण

पैंर 'सदेसो' अर अैस 'पावासर' सरीसो थथको नाखण जोगी पोथियाँ लिखण री खिमता रा धणी लक्ष्मणदान कविया नैं घणा रग। ठेट झमाल, गीत, कवित्त अर सवैया सरीसी आट सू आजर जुग रै लै पडती बाता मायै कलम चलावणी विरला रै इज बस री बात। श्री कविया अटी मे पडी जूनकी विद्या नैं नवै रग सू सराबोर कर दीवी। उडीक राखू क आवता दिना मे कवि आपरै वणूका रै पाण जग चावो हू जावैला।

जहूर खा मेहर

श्री लक्ष्मणदान कविया राजस्थानी भाषा रा मोटि-यार कवि है, इणरी साख कवि रो 'सदेसो' नै 'पावासर' काव्य आप ईज भरे। सकलन री कवितावा पाणदार नैं धारदार है। भाषा दमखम राखै नैं सबद छोला भरै। कविता मे राजस्थानी धरती रो सास न सोरम री महक है।

सोभागसिंघ सेखावत